तारांगण

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही गृहपत्रिका दिसंबर, 2025

TAARANGAN

Bank of India's Quarterly House Journal December, 2025

सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी

22 डिजिटल रुपया: भारत के मौद्रिक भविष्य का अगला चरण, ग्राहक अनुभव और बैंक ऑफ़ इंडिया की पहल

वैश्वीकरण, व्यापार, बाजार और भारतीय भाषाएं..... 6

मुद्रा और बैंक: स्थिर अर्थव्यवस्था की कुंजी..... 9

The Bank as a Financial Data Fiduciary: Strengthening Governance and Regulatory Alignment 13

फिनटेक बनाम पारंपरिक बैंकिंग: सहयोग या प्रतिस्पर्धा 16

बैंकिंग उद्योग में ऑनलाइन निगरानी प्रणाली का प्रभावीकरण 18

भारत में मेगा बैंक मर्जर और प्रबंधन एवं कर्मचारियों की भूमिका 26

जलवायु परिवर्तन और वित्तपोषण: चुनौतियां, अवसर, और सतत भविष्य की राह 38

संघर्ष से शिखर तक: विश्व विजेता भारतीय महिलाएं ... 43

जब लगे मै नहीं कर पाऊँगी 45

नेपाल यात्रा: संस्कृति, शांति और सौन्दर्य की खोज में ... 48

सिनेमा के पर्दे की ओट से झाँकता साहित्य का नोबेल 51

ताडोबा का डरावना लेकिन यादगार सफर 54

रिश्तों की जमापूंजी 56

भारत सरकार का उपक्रम (A Government of India undertaking)
बैंक ऑफ इंडिया की द्विभाषी तिमाही गृहपत्रिका
A Quarterly Bilingual House Journal of Bank of India
अंक: अक्तूबर-दिसंबर 2025
Issue: October - December 2025

संरक्षक / Patron

रजनीश कर्नाटक
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ
Rajneesh Karnatak
MD & CEO

संपादकीय मंडल / Editorial Board

ए.के. पाठक
मुख्य महाप्रबंधक
A. K. Pathak
Chief General Manager

बी.एस. फोनिया
उप महाप्रबंधक
B.S. Fonia
DGM HR

मऊ मैत्रा
संपादक
Mou Maitra
Editor

अमरीश कुमार
सह-संपादक
Amrish Kumar
Co-Editor

Back Cover
Dr. Anima
W/o Shashikant Prasad (Zonal Manager)
Varanasi Zonal Office

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों ।

Printed, Published and Edited by

Mou Maitra on behalf of Bank of India,
Published from Head Office :
Star House, G-5, 'G' Block,
Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai - 400 051 and printed at

PRINT PLUS PVT. LTD.,
212, Swastik Chambers, S.T. Road,
Chumbur, Mumbai 400071

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ / MD & CEO

प्रिय साथियो,

गृह पत्रिका तारांगण दिसंबर 2025 का नवीनतम अंक विशेष रूप से प्रौद्योगिकी सक्षम निगरानी के साथ-साथ फिनटेक, पारंपरिक बैंकिंग जैसे प्रमुख विषयों पर केंद्रित है। तिमाही के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह-तीन माह के अभियान को विभिन्न नवोन्मेषी गतिविधियों के माध्यम से पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। यह संगठनात्मक नैतिकता और पारदर्शिता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सशक्त बनाता है।

बैंक द्वारा हाल ही में शुरू किए गए "Navoday" अभियान ने नई शाखाओं में कासा और रिटेल कारोबार को नई गति प्रदान की है। साथ ही, बैंक ने कासा, टर्म डिपॉज़िट ट्रांसफॉर्मेशन एवं जमा वृद्धि को सुदृढ़ करने हेतु ''स्टार उड़ान'' प्रोजेक्ट की पहल प्रारंभ की है, जिसका उद्देश्य नवाचार को बढ़ावा देना, ग्राहक सहभागिता को सुदृढ़ कर संतुलित एवं मजबूत जमा पोर्टफोलियो का निर्माण करना है। इसके अतिरिक्त "TDR Winter Rush" एवं 450-दिवसीय "Star Swarnim" टीडीआर जैसी योजनाएं ग्राहकों को आकर्षक निवेश का विकल्प प्रदान कर रही है। इन पहलों ने बैंक की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और बाजार में हमारी स्थिति को और अधिक सुदृढ़ किया है।

हम वित्तीय वर्ष 2025-26 की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं। यह समय बहुत ही महत्वपूर्ण है कि सभी स्टाफ सदस्य अपना शत प्रतिशत देते हुए पूरी दक्षता और बैंक की उत्पादकता की बेहतरी के लिए कार्य करें। स्लिपेज रोकना, कासा बढ़ाना, अग्रिमों में वृद्धि, एनपीए वसूली में तेजी लाना और आस्ति गुणवत्ता में सुधार हमारी प्राथमिकताएं हैं। मेरा आग्रह है कि आप सभी समर्पित और टीम भावना के साथ इस वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करें।

आप सभी उत्साहपूर्वक गृहपत्रिका तारांगण को पढ़ें, यह न केवल बैंकिंग के व्यावहारिक अनुभवों को साझा करती है बल्कि हमारे बैंक की विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों और सीखों का समृद्ध संकलन भी प्रस्तुत करती है। मै आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य, निरंतर सफलता और समृद्ध नव वर्ष की मंगल कामना करता हूँ।

हमें आशा है कि नव वर्ष 2026 में हम सभी के सम्मिलित प्रयासों से बैंक नई ऊचाइयों को प्राप्त करें और समर्पण के साथ संगठनात्मक उत्कृष्टता को हासिल करने के लिए एक टीम की तरह प्रतिबद्ध हो।

शुभकामनाओं सहित

(रजनीश कर्नाटक)/(Rajneesh Karnatak)

Dear Colleagues,

The latest December 2025 edition of our in-house magazine "Taarangan" places a special focus on key themes such as FinTech, Traditional Banking, as well as Technology Enabled Monitoring. The Vigilance Awareness Week, observed during the Quarter as a Three-Month campaign, was celebrated with great enthusiasm through various innovative activities. This has strengthened our commitment to organizational ethics and transparency.

The recently launched "Navoday" campaign was introduced to give significant momentum to CASA and retail business growth in new branches. The Bank has initiated "Star Udaan" Project for CASA, Term Deposit Transformation & Deposit Growth, aimed at driving innovation, enhancing customer engagement, and building a balanced & sustainable deposit portfolio. Additionally, schemes like "TDR Winter Rush" and the 450-day "Star Swarnim TDR" are offering attractive investment options to customers. These initiatives have further enhanced the Bank's competitive capability and strengthened our position in the market.

As we enter the final quarter of the FY 2025-26, this period becomes crucial for every staff member to deliver their best with optimal effectiveness towards improving the Bank's productivity. Preventing slippages, increasing CASA, growth in advances, accelerating NPA recovery, and improving Assets quality remain our core priorities. I urge all of you to continue demonstrating teamwork and dedication to achieve excellence in performance during this concluding quarter.

I also encourage everyone to read our in-house journal Taarangan. It not only shares practical banking insights but also presents a rich compilation of the bank's activities, achievements, and learnings. I extend my heartfelt wishes to each one of you for good health, continued success, and a prosperous New Year.

May the New Year 2026 take our Bank to greater heights as we collectively strive to achieve organizational excellence with unity and dedication.

With Best Wishes

संपादकीय / Editorial

प्रिय पाठको,

नव वर्ष 2026 की शुभकामनाओं के साथ आपके समक्ष तारांगण का दिसंबर 2025 अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही बैंक ऑफ़ इंडिया परिवार के लिए उपलब्धियों और विभिन्न आयोजनों से भरपूर रही है। इस तिमाही में बैंक ने विभिन्न योजनाओं के साथ-साथ ग्राहक-उन्मुख अभियानों के द्वारा बैंक की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और बाजार में अपनी स्थिति को और अधिक सुदृढ़ किया है। बैंक में इस अवधि के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह और संविधान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया।

तारांगण के इस अंक में बैंक की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों और नवीन पहलों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। अनुभवी एवं युवा स्टाफ सदस्यों के विचार, लेख, अनुभव और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ इस संस्करण को विशेष रूप से समृद्ध बनाती हैं। इस बार के अंक में आपको बैंकिंग, फिनटेक और पारंपरिक बैंकिंग, बैंकिंग उद्योग में ऑनलाइन निगरानी, डिजिटल रुपया: भारत के मौद्रिक भविष्य का अगला चरण जैसे समसामयिक आर्थिक लेख के साथ जलवायु परिवर्तन और वित्तपोषण चुनौतियां नामक लेख पढ़ने को मिलेंगे। इसके अतिरिक्त कविता, लघुकथा, और संस्मरण इस अंक को साहित्यिक विविधता प्रदान करती हैं।

संपादकीय टीम उन सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस अंक के निर्माण में अपना समय, ज्ञान और सृजनात्मक योगदान दिया। हमें विश्वास है कि यह संस्करण पाठकों को नई दृष्टि, प्रेरणा और उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा तथा बैंक ऑफ इंडिया परिवार में ज्ञान-साझा करने की इस परंपरा को और मजबूत करेगा।

संपादकीय टीम पत्रिका को रोचक और जानकारी उन्मुख बनाने का प्रयास कर रही है। इस संदर्भ में आप सभी की प्रतिक्रियाएं हमारे लिए सदैव महत्त्वपूर्ण रही हैं। कृपया अपने मूल्यवान सुझाव और अभिमत हमें अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका के इस अंक को पढ़ें और अपनी प्रतिक्रियाएं हमें HeadOffice.Taarangan@bankofindia.bank.in पर अवश्य भेजें।

शुभकामनाओं सहित

Dear Readers,

With best wishes for the year 2026, it gives me immense pleasure to present the December 2025 issue of Taarangan. The third quarter of the year 2025 proved to be a period marked by significant achievements and a wide range of activities for the Bank of India family. During this quarter, the Bank further strengthened its competitive capabilities and market position through various schemes and customer-centric campaigns. In this period, the Bank also celebrated Vigilance Awareness Week and Constitution Day with great enthusiasm.

This issue of Taarangan brings together a comprehensive compilation of the Bank's diverse activities, achievements, and innovative initiatives. The thoughts, articles, experiences, and creative expressions shared by both experienced and young staff members have made this edition especially enriching. In this issue, readers will find contemporary articles on topics such as banking, fintech and traditional banking, online monitoring in the banking industry, Digital Rupee: The Next Phase of India's Monetary Future, as well as an article on Climate Change and Financing Challenges. In addition, poems, short stories, and memoirs add literary diversity to this edition.

The Editorial Team expresses its sincere gratitude to all colleagues who have contributed their time, knowledge, and creativity for the publication of this issue. We are confident that this edition will provide readers with new perspectives, inspiration, and useful insights, and will further strengthen the tradition of knowledge-sharing within the Bank of India family.

Editorial team is striving to make the house journal interesting and informative. In this regard your feedback has always been of great importance to us. We request you to kindly share your valuable suggestions and opinions with us. Please read this issue of the magazine and send your feedback to Headoffice.Taarangan@bankofindia.bank.in

Regards,

(मऊ मैत्रा) /(Mou Maitra)

वैश्वीकरण, व्यापार, बाजार और भारतीय भाषाएं

''मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी'' – 1955 की फिल्म श्री 420 का यह गीत आज भी हमारे दिलों में गूँजता है। यह सिर्फ एक गाना नहीं था, बल्कि एक भावना थी, जो भाषा की ताकत को दिखाती है। सोचिए, एक हिंदी गीत, जिसे शायद जापानी या रूसी समझ भी न पाएँ, फिर भी उनके दिल को छू गया। यह बताता है कि भाषा केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने का सेतु है। भारत, जहाँ 22 मान्यता प्राप्त भाषाएँ और हजारों बोलियाँ हमारी विविधता का प्रतीक हैं, एक ऐसा देश है जहाँ भाषा सिर्फ बातचीत का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, पहचान और जीवन का हिस्सा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, जब दुनिया एक-दूसरे से जुड़ रही है, भारत जैसे विशाल और विविध बाजार में व्यवसायों के सामने एक सवाल खड़ा है – क्या अंग्रेजी का दबदबा ही काफी है, या स्थानीय भाषाएँ ही उनकी असली ताकत हैं? आज मैं आपके सामने यही प्रस्तावना रखना चाहता हूँ कि भारतीय भाषाएँ न केवल हमारी भावनाओं और संस्कृति से जुड़ी हैं, बल्कि व्यवसायों के लिए भी एक रणनीतिक संपत्ति हैं, जो ग्राहकों का विश्वास, बाजार का विस्तार और लंबे समय तक सफलता सुनिश्चित करती हैं। हर भाषा अपनी कहानी कहती है, अपनी मिट्टी की खुशबू लिए हुए। ''माँ'' शब्द हिंदी में हो, ''अम्मा'' तमिल में, या ''आई'' मराठी में – अर्थ एक ही है, लेकिन हर शब्द में उसको सुनने वाले व्यक्ति के लिए अपनेपन का एहसास है। जब कोई हमारी मातृभाषा में बात करता है, मनोवैज्ञानिक रूप से हम उसके साथ एक जुड़ाव महसूस करते हैं। यह विपणन और बिक्री में बढ़ोतरी का कारक भी बनता है।

यह भावनात्मक जुड़ाव व्यवसायों के लिए भी उतना ही अहम है। जब कोई कंपनी हमारी भाषा में बात करती है, तो वह सिर्फ जानकारी नहीं देती, बल्कि हमारे दिल तक पहुँचती है। एक वैश्विक सर्वेक्षण के अनुसार, 78% भारतीय ग्राहक उन ब्रांड्स पर ज्यादा भरोसा करते हैं जो उनकी मातृभाषा में संवाद करते हैं *(Common Sense Advisory, 2022)*। मिसाल के तौर पर, अगर कोई ग्राहक अपनी समस्या को अपनी भाषा में बता पाता है और उसी भाषा में जवाब पाता है, तो उसका विश्वास बढ़ता है। यह विश्वास ही किसी व्यवसाय को भीड़ से अलग करता है। यह सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी काम करता है। जब कोई ब्रांड हमारी भाषा को अपनाता है, तो वह हमारी संस्कृति का सम्मान करता है। भारत जैसे देश में, जहाँ हर राज्य और हर क्षेत्र की अपनी भाषा और पहचान है, यह जुड़ाव व्यवसायों के लिए एक अनमोल खजाना है। उदाहरण के लिए, एक ग्राहक जो अपनी भाषा में विज्ञापन देखता है, उसे लगता है कि यह ब्रांड उसके लिए बना है। यह भावना ग्राहक और कंपनी के बीच एक मजबूत रिश्ता बनाती है।

हमारी भाषाएँ हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीनतम भाषाओं में सम्मिलित संस्कृत हमारे वेद, उपनिषद एवं पुराणों के अथाह दर्शन का परिचायक रहा है। तमिल, जो दुनिया की सबसे पुरानी जीवित भाषाओं में से एक है, अपने साहित्य, संगीत और काव्य से तमिलनाडु की परंपराओं को जिंदा रखती है। बंगाली में रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाएँ बंगाल की शान हैं, तो उर्दू की शायरी और ग़ज़लें हमारी भावनाओं को शब्द देती हैं। हिंदी ने साहित्य, सिनेमा और संगीत के जरिए देश के विभिन्न प्रांतों को जोड़ा है।

इतिहास में भी हमारी भाषाओं ने हमें गौरवान्वित किया है। 1977 में, अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देकर दुनिया को हमारी सांस्कृतिक ताकत दिखाई। आज, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विदेशों में भारतीय समुदाय से हिंदी में बात करते हैं, ताकि उन्हें अपनेपन का एहसास हो। राज्यों के मुख्यमंत्री भी अपनी-अपनी भाषाओं में जनता से संवाद करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि भाषा ही लोगों के अंतर्मन तक पहुँचने का मार्ग है।

यह सांस्कृतिक महत्व व्यवसायों के लिए भी मायने रखता है। भारत में 70 करोड़ से ज्यादा लोग अपनी मातृभाषा में ऑनलाइन सामग्री चाहते हैं *(KPMG-Google, 2021)*। यह आँकड़ा बताता है कि जो व्यवसाय हमारी भाषाओं को अपनाते हैं, वे न केवल हमारी जड़ों से जुड़ते हैं, बल्कि एक विशाल और अनछुए बाजार तक पहुँचते हैं। मिसाल के तौर पर, तमिल फिल्मों ने जापान में 30 साल पहले धूम मचाई थी। रजनीकांत की फिल्में आज भी वहाँ लोकप्रिय हैं, और यह सब बिना अंग्रेजी के हुआ। यह दिखाता है कि भाषा की ताकत सीमाओं को पार कर सकती है। भारत एक विशाल और विविध बाजार है, जहाँ 1.4 अरब से अधिक लोग रहते हैं जो कि विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या है। लेकिन यहाँ केवल 10% लोग ही अंग्रेजी में सहज हैं, यानी 90% आबादी अपनी मातृभाषा पर निर्भर हैं। ऐसे में, व्यवसायों के लिए स्थानीय भाषाएँ अपनाना न सिर्फ एक विकल्प है, बल्कि एक जरूरत है। ई-कॉमर्स इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। फ्लिपकार्ट ने हिंदी, तमिल, और कन्नड़ में अपनी वेबसाइट और ऐप शुरू की, जिसके बाद टियर-2 और टियर-3 शहरों में उसकी बिक्री 30% बढ़ गई *(IAMAI, 2023)*। अमेज़न इंडिया ने भी क्षेत्रीय भाषाओं में उत्पाद विवरण और ग्राहक सहायता शुरू की, जिससे ग्रामीण भारत में उसकी पहुँच बढ़ी। ये कंपनियाँ समझती हैं कि छोटे शहरों और गाँवों के लोग अपनी भाषा में खरीदारी करना पसंद करते हैं।

ग्राहक सेवा में भी भाषा का असर साफ दिखता है। एयरटेल ने हिंदी, तमिल, और बंगाली में हेल्पलाइन शुरू की, जिसके बाद ग्राहक संतुष्टि में 20% की बढ़ोतरी हुई। जियो ने अपनी मार्केटिंग में क्षेत्रीय भाषाओं का इस्तेमाल किया, जैसे तेलुगु और मलयालम में विज्ञापन, जिससे उसने छोटे शहरों और गाँवों में अपनी पैठ बनाई। एक रिपोर्ट के मुताबिक, बहुभाषी रणनीति अपनाने वाले व्यवसायों की आय 50% तक बढ़ सकती है *(NASSCOM, 2024)*। यह सिर्फ बड़ी कंपनियों की बात नहीं है। छोटे व्यवसाय भी इससे फायदा उठा रहे हैं।

हमारी अपनी बैंक ऑफ़ इंडिया की ओमनी नियो मोबाइल ऐप अंग्रेजी के इतर भी 12 भाषाओँ में उपलब्ध है। इससे देश भर में फैले हमारे 12 करोड़ से भी अधिक ग्राहकों को अपनी भाषा में लेन-देन करने की सहूलियत मुहैया होती है।

भाषा ग्राहक की ब्रांड के प्रति वफादारी को भी बढ़ाती है। जब कोई कंपनी हमारी भाषा में बात करती है, तो हम उसे अपना मानते हैं। यह भावनात्मक जुड़ाव लंबे समय तक ग्राहकों को जोड़े रखता है। इसके अलावा, स्थानीय भाषाएँ व्यवसायों को प्रतिस्पर्धा में आगे रखती हैं। जब दो कंपनियाँ एक जैसा उत्पाद बेच रही हों, तो वह जीतती है जो ग्राहक की भाषा बोलती है। यह साबित करता है कि भाषा सिर्फ संवाद का साधन नहीं, बल्कि बाजार में सफलता की कुंजी है। औपनिवेशिक काल की अंग्रेज़ी-प्रधान प्रवृत्ति ने हमारी भाषाओं को लंबे समय तक पीछे रखा, पर तकनीक ने उन्हें नया जीवन दिया है। 2025 तक, भारत में 10 में से 9 नए इंटरनेट उपयोगकर्ता अपनी मातृभाषा का इस्तेमाल करेंगे *(Meta-India, 2023)*। यह एक क्रांतिकारी बदलाव है। गूगल और यूट्यूब पर हिंदी, तमिल, और बंगाली सामग्री की माँग 40% बढ़ी है। यूट्यूब पर हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों और गानों के 'व्यूज़' अरबों में हैं, जो दिखाता है

कि लोग अपनी भाषा में मनोरंजन और जानकारी चाहते हैं। बड़े टेक प्लेटफॉर्म इस बदलाव को समझ रहे हैं। पेटीएम ने हिंदी, मराठी, और तेलुगु में अपनी सेवाएँ शुरू कीं, जिससे उसने ग्रामीण भारत में लाखों नए उपयोगकर्ता जोड़े। गूगल पे ने भी क्षेत्रीय भाषाओं में इंटरफेस पेश किया, जिससे छोटे व्यापारियों और ग्राहकों के बीच उसकी लोकप्रियता बढ़ी। फेसबुक और व्हाट्सएप जैसे ऐप्स ने भी हिंदी, बंगाली, और पंजाबी में चैट और पोस्ट की सुविधा दी, जिससे लोग अपनी भाषा में जुड़ रहे हैं। तकनीक ने भाषाई बाधाओं को तोड़ा है। गूगल ट्रांसलेट और वॉयस असिस्टेंट जैसे टूल्स व्यवसायों को कई भाषाओं में काम करने में मदद कर रहे हैं। मिसाल के तौर पर, एक छोटा व्यापारी अब अपनी वेबसाइट को हिंदी, तमिल, और मराठी में आसानी से अनुवाद कर सकता है। यह तकनीकी क्रांति भारतीय भाषाओं को न केवल बचा रही है, बल्कि उन्हें वैश्विक मंच पर ले जा रही है।

हर सिक्के के दो पहलू होते ही हैं। आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में पदस्थ रहते हुए मैंने इसका अनुभव भी किया। दक्षिण प्रवास के दौरान अपने रोज़मर्रा के जीवन मे स्थानीय दुकानदारों से सामान की खरीद फरोख्त में मुझे और मेरी पत्नी को ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। कई बार प्रवासियों के लाभ के लिए अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। व्यवसायों के लिए भी स्थानीय भाषाओं को अपनाने में कुछ चुनौतियाँ हैं। अनुवाद की लागत, तकनीकी संसाधनों की कमी, और कर्मचारियों का प्रशिक्षण इसके बड़े मुद्दे हैं। मिसाल के तौर पर, एक कंपनी को अपनी वेबसाइट को 10-12 भाषाओं में अनुवाद करने में शुरुआती खर्च उठाना पड़ सकता है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि अंग्रेजी ही काफी है, क्योंकि यह वैश्विक भाषा है।

लेकिन ये चुनौतियाँ समाधान से बड़ी नहीं हैं। तकनीक ने अनुवाद को सस्ता और तेज बना दिया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑटोमेटेड टूल्स की मदद से कंपनियाँ कम खर्च में बहुभाषी सेवाएँ दे सकती हैं। दूसरी ओर, यह सच है कि अंग्रेजी वैश्विक भाषा है, लेकिन भारत में 90% लोग अपनी मातृभाषा में सहज हैं। जो कंपनियाँ इस निवेश को अपनाती हैं, वे लंबे समय में ग्राहक वफादारी और बाजार हिस्सेदारी हासिल करती हैं। मिसाल के तौर पर, एक स्टडी में पाया गया कि बहुभाषी रणनीति से शुरुआती लागत 25% बढ़ती है, लेकिन कालांतर में राजस्व की 50% बढ़ोतरी होती है *(NASSCOM, 2024)*।

हमारी भाषाएँ सिर्फ शब्द नहीं, वे हमारी भावनाओं और पहचानों को उद्धृत करती है। जब व्यवसाय इनका सम्मान करते हैं, तो वे न केवल व्यापार करते हैं, बल्कि भारत की आत्मा से जुड़ते हैं। हमारी फिल्में, संगीत, और कला पहले ही दुनिया में छा रही हैं - अब समय है कि व्यवसाय भी इस शक्ति को अपनाएँ। हमें अपनी भाषाओं को बचाना है, इन्हें बढ़ावा देना है। व्यवसायों को चाहिए कि वे स्थानीय भाषाओं में निवेश करें, ताकि भारत की आत्मा के साथ-साथ उसका बाजार भी जीत सकें। यह सिर्फ शुरुआत है - आने वाला समय हमारी भाषाओं का है। जब दुनिया हमारी भाषाओं को अपनाएगी, तो वह भारत के दिल से जुड़ेगी। यह हमारी ताकत है, हमारा गर्व है, और हमारा भविष्य है।

कौस्तव साहा
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
प्रबंधन विकास संस्थान
सीबीडी बेलापुर

मुद्रा और बैंक: स्थिर अर्थव्यवस्था की कुंजी

बैंक वह वित्तीय संस्था है, जो जनता से धनराशि जमा करने और जनता को ऋण देने का काम करती है। बैंक केवल मुद्रा का लेन-देन ही नहीं करते बल्कि साख का व्यवहार भी करते हैं। इसीलिए बैंक को साख का सृजनकर्ता भी कहा जाता है।

भारतीय बैंकिंग कंपनी अधिनियम के अंतर्गत बैंक की परिभाषा निम्न शब्दों में दी गई:

❖ **''ऋण देना और विनियोग के लिए सामान्य जनता से राशि जमा करना तथा चेकों, ड्राफ्टों तथा आदेशों द्वारा मांगने पर उस राशि का भुगतान करना बैंकिंग व्यवसाय कहलाता है और इस व्यवसाय को करने वाली संस्था बैंक कहलाती है।''**

मुद्रा और बैंक किसी भी आधुनिक अर्थव्यवस्था की नींव हैं। ये दोनों आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करके लेन-देन को सरल बनाती है, जबकि बैंक एक वित्तीय मध्यस्थ के रूप में इस मुद्रा के प्रवाह को विनियमित और प्रबंधित करते हैं। इन दोनों की संयुक्त भूमिका, आर्थिक विकास, स्थिरता और पूंजी निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है।

पिछले दौर में मुद्रा और बैंक का अस्तित्व:

ईसा से दो हज़ार वर्ष पहले भी राशि उधार लेने की प्रथा थी। प्राचीनकाल में साहूकारी का नियम था परंतु ब्याज की दर एवं राशि वसूल करने के नियम आज जैसे न थे। मध्य एशिया में हुंडी का प्रयोग 12वीं शताब्दी के आस-पास होने लगा था क्योंकि विदेशी व्यापार का क्षेत्र बढ़ने लगा और एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन भेजने की आवश्यकता हुई। मुगल सम्राटों ने धनी महाजनों और साहूकारों को कर वसूली के अधिकार सौंपे और उन्हें स्थान-स्थान पर कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। जनसाधारण अपनी बचत राशि को इन महाजनों के पास जमा करते और जमा राशि पर महाजन ब्याज भी देते थे। इस प्रकार आधुनिक बैंक शुरू होने से पहले महाजन ही बैंकिंग का काम करता था, जहां धनराशि जमा भी की जाती थी और रुपया उधार भी मिलता था।

इसके उपरांत अंग्रेजों ने अपनी व्यापारिक और मौद्रिक आवश्यकताओं के लिए एजेंसी गृह और ज्वॉइंट स्टॉक बैंक स्थापित किए। 18वीं शताब्दी की समाप्ति तक औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप इंग्लैंड और यूरोप में व्यापार की वृद्धि हुई और वहाँ नए-नए केंद्र बनते गए। भारत में 1806 में 'बैंक ऑफ कोलकाता' स्थापित हुआ इसके बाद 1840 तथा 1843 में 'बैंक ऑफ बंबई' और 'बैंक ऑफ मद्रास' स्थापित किए गए। ये तीन प्रेसीडेंसी बैंक विदेशी पूंजी और संचालन से चलाये गए थे और इनका काम 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के व्यापार में सहायता करना था। इसके पश्चात भारत में सीमित देनदारी के आधार पर कई बैंक स्थापित हुए। परिणामस्वरूप व्यावसायिक बैंकों की संख्या में बढ़त होने लगी।

इसके पश्चात 1906 से लेकर 1913 तक बैंकों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। भारत के प्रसिद्ध बैंक **''बैंक ऑफ इंडिया''**, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा इसी बीच स्थापित हुए।

स्वतन्त्रता पूर्व मुद्रा और बैंक की वह भूमिका आज के आधुनिक दौर में अलग रूप में परिभाषित होती है। अब मुद्रा और बैंक एक दूसरे के अभिन्न अंग बन चुके हैं। अर्थव्यवस्था की वह धुरी बन चुके हैं जहां इनमें से एक के बिना भी अर्थव्यवस्था का लड़खड़ाना संभव है।

आज का युग आर्थिक गतिविधियों का युग है, और इन सभी की नींव एक ही तत्व पर टिकी हुई है – मुद्रा। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अल्फ्रेड मार्शल ने सही कहा था, ''मुद्रा वह धुरी है जिस पर समस्त अर्थशास्त्र घूमता है''। वस्तु विनिमय प्रणाली की अक्षमताओं, जैसे 'इच्छाओं के दोहरे संयोग' के अभाव और मूल्य के सामान्य मापक की कमी ने, मुद्रा के विकास को जन्म दिया। विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा ने व्यापार, निवेश, उत्पादन और उपभोग की प्रक्रियाओं को सरल बना दिया है, जिससे आर्थिक दक्षता और विकास को बढ़ावा मिला है। और जब हम दूसरे पक्ष को देखते हैं जहां बैंक एक वित्तीय संस्थान है जो जनता से जमा स्वीकार करता है और उन लोगों को ऋण प्रदान करता है जिन्हें धन की आवश्यकता होती है। बैंक बचतकर्ताओं और उधारकर्ताओं के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हैं।

इसके फलस्वरूप सर्वप्रथम हम अर्थव्यवस्था के निर्माण में बैंक की भूमिका एवं उसके कार्य को समझेंगे।

बैंकों के मुख्य कार्य :

1. बैंक विभिन्न प्रकार के खाते, जैसे बचत खाते, चालू खाते और सावधि जमा (फिक्स्ड डिपॉजिट), प्रदान करके लोगों की बचतों को सुरक्षित रखते हैं और उन पर ब्याज देते हैं।
2. बैंक व्यक्तियों (घर, कार ऋण आदि के लिए) और व्यवसायों (व्यापार विस्तार, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं आदि के लिए) को विभिन्न उद्देश्यों के लिए ऋण देते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।
3. बैंक अपनी जमा राशि का उपयोग ऋण देने के लिए करते हैं। यह प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति को कई गुना बढ़ा देती है, जिसे साख निर्माण कहा जाता है।
4. बैंक चेक, डेबिट/क्रेडिट कार्ड, और इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर जैसी सेवाएं प्रदान करके लेन-देन को सुगम बनाते हैं।
5. **अन्य सेवाएं:** बैंक लॉकर सुविधाएं, बीमा उत्पाद और विदेशी मुद्रा विनिमय जैसी विभिन्न सहायक सेवाएं भी प्रदान करते हैं।

भारत में, विभिन्न प्रकार के बैंक हैं, जिनमें वाणिज्यिक बैंक (commercial banks), सहकारी बैंक (cooperative banks), विकास बैंक (development banks), और देश के बैंकिंग प्रणाली के शिखर पर स्थित भारतीय रिजर्व बैंक (RBI - central bank) शामिल हैं।

अर्थव्यवस्था में बैंक और मुद्रा की परस्पर क्रिया

बैंक और मुद्रा मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था को गति देने वाले दो इंजनों की तरह काम करते हैं।

पूंजी निर्माण: बैंक लोगों की छोटी-छोटी बचतों को इकट्ठा करके उत्पादक निवेश के लिए बड़ी पूंजी में बदलते हैं। यह पूंजी उद्योगों और बुनियादी ढांचे के विकास को वित्तपोषित करती है, जो देश के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।

मुद्रा का अर्थ और कार्य

मुद्रा को किसी भी ऐसी वस्तु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसे सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा वैध मुद्रा के रूप में मान्यता प्राप्त हो और जो व्यापक रूप से विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार की जाती हो। इसके चार प्रमुख कार्य हैं:

1. यह वस्तुओं और सेवाओं के लेन-देन को सुविधाजनक बनाती है, जिससे वस्तु विनिमय की जटिलताएं दूर होती हैं।
2. मुद्रा वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापने के लिए एक सामान्य इकाई प्रदान करती है, जिससे आर्थिक गणना आसान हो जाती है।
3. लोग अपनी क्रय शक्ति को भविष्य में उपयोग के लिए मुद्रा के रूप में सहेज कर रख सकते हैं (बशर्ते इसका मूल्य स्थिर रहे)।

4. मुद्रा उधार लेने और देने का आधार है। ऋण और ब्याज का निर्धारण मुद्रा में ही होता है, जो आर्थिक गतिविधियों, विशेषकर निवेश, को बढ़ावा देता है।

मूल्य का संचय: लोग अपनी क्रय शक्ति को भविष्य के लिए मुद्रा के रूप में संचित कर सकते हैं, जिससे बचत और निवेश को प्रोत्साहन मिलता है, जो आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

मुद्रा अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है।

1. आधुनिक उत्पादन प्रणाली श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण पर आधारित है, जो मुद्रा के बिना संभव नहीं होता। उत्पादक लागत, लाभ और मूल्य की गणना मुद्रा में करते हैं और उत्पादन के विभिन्न साधनों (श्रम, भूमि, पूंजी) को उनका पारिश्रमिक (मजदूरी, किराया, ब्याज, लाभ) मुद्रा के रूप में देते हैं।
2. मूल्य के भंडार के रूप में, मुद्रा निवेश और रोज़गार को बढ़ावा देती है, जिससे सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि होती है।

   पूंजी निर्माण: बचत को निवेश में बदलने में मुद्रा एक पुल का काम करती है। लोग अपनी बचत को बैंकों या वित्तीय संस्थानों में जमा करते हैं, जो आगे उद्योगों को ऋण देते हैं, जिससे पूंजी निर्माण होता है।
3. बाजार अर्थव्यवस्था में, कीमतें मुद्रा के रूप में व्यक्त की जाती हैं, जो उत्पादकों और उपभोक्ताओं को यह संकेत देती हैं कि संसाधनों का आवंटन कहाँ सबसे कुशल होगा।

   मुद्रा की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने वाले कारक मुद्रा की स्थिरता और मूल्य कई कारकों पर निर्भर करते हैं, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण मुद्रास्फीति और विनिमय दरें हैं।
4. मुद्रा का मूल्य समय के साथ स्थिर नहीं रहता है, और इसमें होने वाले उतार-चढ़ाव का अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।
5. **मुद्रास्फीति (Inflation)** : जब मुद्रा की आपूर्ति बढ़ जाती है और वस्तुओं व सेवाओं की कीमतें बढ़ती हैं, तो मुद्रा का मूल्य गिर जाता है। यह उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति को कम कर देती है, जिससे जीवन स्तर प्रभावित हो सकता है। हालांकि, यह कुछ वर्गों जैसे ऋणियों और उत्पादकों के लिए लाभप्रद हो सकती है। उच्च मुद्रास्फीति आर्थिक अस्थिरता पैदा कर सकती है और स्थिर आय वर्ग के लोगों को बुरी तरह प्रभावित करती है, जिससे समाज में आय की विषमता बढ़ती है।
6. **अपस्फीति (Deflation)** : जब मुद्रा का मूल्य बढ़ता है और कीमतें गिरती हैं, तो अपस्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है। यह स्थिति मंदी (depression) को जन्म दे सकती है, जिससे बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और आर्थिक गतिविधियां धीमी हो जाती हैं।

   प्रभाव: उच्च मुद्रास्फीति बचत को हतोत्साहित करती है, निवेश के माहौल को खराब करती है, और आर्थिक अस्थिरता पैदा कर सकती है। यह आय के पुनर्वितरण को भी प्रभावित करती है, अक्सर निश्चित आय वर्ग वाले लोगों को नुकसान पहुंचाती है।

   नियंत्रण: केंद्रीय बैंक (भारत में भारतीय रिज़र्व बैंक) मौद्रिक नीति उपकरणों जैसे ब्याज दरों को बढ़ाकर या मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करके मुद्रास्फीति को लक्षित सीमा में रखने का प्रयास करते हैं।

   विनिमय दरें : विनिमय दर एक मुद्रा का दूसरी मुद्रा के अनुपात में मूल्य है। यह एक देश की अर्थव्यवस्था की वैश्विक स्थिति को दर्शाती है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

   मजबूत मुद्रा: एक मजबूत घरेलू मुद्रा आयात को सस्ता बनाती है और निर्यात को महंगा, जिससे व्यापार घाटा हो

सकता है। हालांकि, यह उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति को बढ़ाती है।

कमजोर मुद्रा: एक कमजोर मुद्रा निर्यात को सस्ता और प्रतिस्पर्धी बनाती है, जिससे निर्यात क्षेत्र को बढ़ावा मिलता है। हालांकि, यह आयात की लागत बढ़ाती है और आयातित मुद्रास्फीति का कारण बन सकती है।

मुद्रा की आपूर्ति और मौद्रिक नीति

किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा (मुद्रा आपूर्ति) केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति द्वारा प्रबंधित की जाती है। मौद्रिक नीति का उद्देश्य आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ मूल्य स्थिरता बनाए रखना है। जब केंद्रीय बैंक मुद्रा आपूर्ति बढ़ाता है तो ब्याज दरें कम हो सकती हैं, जिससे निवेश और उपभोग को प्रोत्साहन मिलता है। हालांकि, अत्यधिक आपूर्ति मुद्रास्फीति का कारण बन सकती है। इसके विपरीत, मुद्रा आपूर्ति को कम करने से मुद्रास्फीति नियंत्रित होती है, लेकिन यह आर्थिक विकास को धीमा कर सकती है और बेरोजगारी बढ़ा सकती है।

मौद्रिक नीति का कार्यान्वयन: केंद्रीय बैंक (भारत में RBI) अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति और ऋण की उपलब्धता को नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक नीति का उपयोग करता है। बैंक इस नीति को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वित्तीय स्थिरता: एक मजबूत बैंकिंग प्रणाली वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करती है, जबकि मुद्रास्फीति (मुद्रा की मात्रा में अनियंत्रित वृद्धि) आर्थिक अस्थिरता पैदा कर सकती है।

व्यवसाय का समर्थन: बैंक व्यवसायों को कार्यशील पूंजी और दीर्घकालिक ऋण प्रदान करके व्यापार और उद्योग को फलने-फूलने में मदद करते हैं।

निष्कर्ष

मुद्रा आधुनिक आर्थिक प्रणाली का एक अनिवार्य और जटिल घटक है। यह केवल विनिमय का एक माध्यम नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली उपकरण है जो किसी देश की आय, उत्पादन, रोज़गार और समग्र आर्थिक कल्याण को प्रभावित करता है। मुद्रा की आर्थिक स्थिति का प्रबंधन एक नाजुक कार्य है, जिसमें मूल्य स्थिरता (मुद्रास्फीति नियंत्रण) और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना शामिल है। एक स्थिर और अच्छी तरह से प्रबंधित मुद्रा प्रणाली एक मजबूत और लचीली अर्थव्यवस्था की नींव है, जबकि अस्थिरता गंभीर आर्थिक संकटों को जन्म दे सकती है।

मुद्रा और बैंक आधुनिक वित्तीय दुनिया के अभिन्न अंग हैं। मुद्रा लेन-देन का माध्यम है, जबकि बैंक इस माध्यम का प्रबंधन करते हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए पूंजी जुटाते हैं। वे न केवल व्यक्तियों के वित्त प्रबंधन में मदद करते हैं बल्कि एक राष्ट्र की आर्थिक प्रगति और स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। भारतीय संदर्भ में, बैंकों ने समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय सेवाएं समाज के हर वर्ग तक पहुंचें। इन दोनों संस्थानों का कुशल संचालन एक समृद्ध और स्थिर अर्थव्यवस्था की कुंजी है।

गयालाल माझी
आंचलिक प्रबंधक
बर्धमान अंचल

The Bank as a Financial Data Fiduciary: Strengthening Governance and Regulatory Alignment

"Data is the new currency, and trust is the only bank that can sustain it".

In the rapidly evolving digital financial environment, the responsibilities of banks have expanded far beyond their traditional custodial functions. Modern banking institutions now operate at the core of India's data-driven economy, processing vast volumes of personal and financial information every day. This shift has brought forth new fiduciary, regulatory, and governance challenges that demand a more structured and principled approach to data stewardship. As a result, the designation of banks as Financial Data Fiduciaries under the **Digital Personal Data Protection Act, 2023 (hereinafter the 'DPDP Act, 2023')** represents a transformative moment in Indian financial regulation. It compels banks to align their operational, technological, and compliance frameworks with statutory expectations of accountability, transparency, security, and evidentiary integrity.

The DPDP Act, 2023 is designed to create a balanced and rights-based data protection framework in India. It is centred on the fundamental principle that **'personal data belongs to the individual, not to the entity that processes it'.** For banks, this principle acquires unique significance because financial data is both highly sensitive and deeply consequential. Every data element from *account numbers to biometric identifiers and transaction histories* carries the potential to impact the financial security and economic dignity of individuals. Given this sensitivity, the Act categorically imposes fiduciary responsibilities on banks by virtue of their role as entities that determine the purpose and means of processing financial data.

The Act's provisions clearly outline the obligations that banks must fulfil as Financial Data Fiduciaries. **Section 4 of the DPDP Act, 2023** mandates that personal data can be processed only with a lawful basis and for a legitimate purpose. This requires banks to assess every instance of data collection and processing against the benchmarks of necessity and legality. Consent, as defined under **Section 6 of the Act,** must be informed, specific, unconditional, and capable of withdrawal. The principle of purpose limitation requires banks to assure customers that their data will not be used for unrelated or extraneous activities. This not only strengthens customer trust but also ensures that internal processes remain compliant with statutory principles.

One of the most significant obligations under the DPDP Act, 2023 is the duty to implement reasonable security safeguards. **Section 8 of the Act** requires all Data Fiduciaries, including banks, to implement appropriate technical and organisational measures to prevent personal data breaches. Given that financial data breaches can lead to identity theft,

fraud, and severe reputational harm, banks must deploy multi-layered security protocols, including *encryption, secure access controls, continuous system monitoring, and incident response mechanisms.* **The Digital Personal Data Protection Rules, 2025 (hereinafter the 'DPDP Rules, 2025)** further specify the standards that banks must adopt, *including encryption protocols, periodic vulnerability assessments, breach reporting procedures, and cybersecurity governance structures.* These requirements reflect the systemic importance of banks and the need for heightened vigilance in safeguarding financial information.

Banks that process large volumes of data or engage in high-impact processing activities are likely to be classified as **Significant Data Fiduciaries under Section 10 of the DPDP Act, 2023.** This classification brings additional compliance obligations, including *mandatory Data Protection Impact Assessments (hereinafter 'DPIAs'), periodic audits, and the appointment of a dedicated Data Protection Officer (hereinafter the 'DPO').* The DPO plays a crucial role in ensuring enterprise-wide compliance and serves as the primary interface between the bank and regulatory authorities. The DPIAs, on the other hand, require banks to evaluate data-processing risks associated with new technologies such as artificial intelligence-driven credit scoring, behavioural analytics, and automated fraud detection systems. These assessments ensure that technological innovation does not compromise privacy or regulatory compliance.

The DPDP Act, 2023 also provides individuals with rights that banks must uphold. *Customers* have the right to access, correct, update, and erase their personal data, subject to statutory restrictions. Banks must establish efficient grievance redressal mechanisms to respond to such requests within the time limits prescribed by the DPDP Rules, 2025. This requires *a reengineering of backend processes, integration of data repositories, and training staff* to ensure that customer queries are resolved promptly and accurately. A responsive grievance system strengthens customer confidence in the bank's commitment to data protection.

From a governance standpoint, the responsibilities imposed on banks extend beyond the mere implementation of technical safeguards. They require a shift in organisational culture. Data protection must become a core value embedded across all levels of the institution — from *frontline staff to senior management.* Regular training, internal audits, and awareness programmes are essential to cultivate a culture of accountability. Banks must ensure that employees understand not just the procedural requirements but also the ethical underpinnings of data protection.

The implications of these responsibilities become even more significant when considered in light of the **Bhartiya Sakshya Adhiniyam, 2023 (hereinafter the Adhiniyam, 2023),** which *governs evidentiary standards* in India. Under this Act, *digital records are admissible as evidence, provided their integrity and authenticity can be established.* For banks, which rely heavily on digital documentation, this requirement underscores the importance of maintaining secure and tamper-proof data systems. **Sections 61 to 65 of the Adhiniyam** outline the conditions for the *admissibility of electronic evidence,* emphasising *the need for reliable metadata, audit trails, and secure retention practices.* Any lapse in data integrity, whether due to improper handling or insufficient safeguards, may weaken the evidentiary value of financial

records in litigation or regulatory proceedings.

The synergy between the DPDP Act, 2023 and the Adhiniyam, 2023 reinforces the need for robust data governance in banking. While the DPDP Act, 2023 focuses on the ethical and legal dimensions of data protection, the Adhiniyam, 2023 highlights the importance of maintaining evidentiary reliability. Together, they create a holistic framework that requires banks to adopt end-to-end data governance practices encompassing collection, processing, storage, transmission, and disposal. This integrated approach ensures that customer data remains secure, reliable, and available for legitimate purposes, whether regulatory or judicial.

The DPDP Act, 2023 and the DPDP Rules, 2025 also emphasise *accountability through transparency obligations.* Banks must issue privacy notices that clearly explain what data is collected, how it is used, and with whom it is shared. They must also notify customers and the Data Protection Board in the event of a data breach. The 2025 Rules require breach notifications **within 72 hours**, *a provision designed to minimise harm and ensure timely regulatory intervention.* These transparency measures are aligned with global best practices and contribute to strengthening systemic trust in the banking sector.

Furthermore, *the principle of data minimisation* requires banks to limit data collection to what is strictly necessary for the provision of services. Legacy processes that demand excessive documentation must be rationalised to comply with this requirement. By reducing unnecessary data collection, banks can reduce operational risks and improve compliance outcomes.

As the financial ecosystem increasingly integrates with digital public infrastructure such as *UPI, Aadhaar-enabled services, and account aggregators,* banks must align their data governance frameworks with broader national objectives. The DPDP Rules, 2025 encourage the adoption of *privacy-by-design frameworks,* which require banks to incorporate data protection principles into the architecture of their products and services. This ensures that privacy is not treated as an afterthought but is built into the system from the outset.

In conclusion, the designation of banks as Financial Data Fiduciaries represents a paradigm shift in the legal and regulatory landscape. The DPDP Act, 2023, The DPDP Rules, 2025 and the Bhartiya Sakshya Adhiniyam, 2023 collectively impose a comprehensive framework that requires banks to strengthen governance mechanisms, enhance compliance systems, and uphold the highest standards of data integrity. By embracing these responsibilities, banks not only ensure statutory compliance but also reinforce customer trust, support systemic stability, and contribute to the integrity of India's digital financial ecosystem. As already highlighted, in an era where data is more valuable than deposits, a bank's credibility is measured not only in balance sheets but in how faithfully it guards the invisible asset every customer shares, in our case it is data. The future of banking thus lies in responsible data stewardship, and institutions that recognise this imperative will emerge as leaders in the digital era.

Aditya Kumar Srivastava
Law officer
Zonal office- Bokaro

फिनटेक बनाम पारंपरिक बैंकिंग: सहयोग या प्रतिस्पर्धा

भारत में बैंकिंग की दुनिया तेजी से बदल रही है। जहाँ पहले बैंक ही हर तरह की वित्तीय सेवाओं का एकमात्र ज़रिया हुआ करते थे, अब वहां फिनटेक कंपनियां यानी वित्तीय तकनीक से जुड़ी नई संस्थाएँ भी बड़ी भूमिका निभाने लगी हैं। एक तरफ परंपरागत बैंक हैं, जिन पर लोगों का भरोसा वर्षों से बना हुआ है, तो दूसरी तरफ फिनटेक हैं, जो तकनीक के ज़रिए बैंकिंग को तेज, आसान और मोबाइल फोन तक सीमित कर रहे हैं। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या ये दोनों एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी हैं या अब एक साथ मिलकर काम कर रहे हैं?

फिनटेक शब्द बना है 'फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी' से, और इसका मतलब है तकनीक के सहारे वित्तीय सेवाएं देना। आज डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन ऋण, बीमा, निवेश जैसे काम लोग फोन ऐप्स से कर रहे हैं। 'पेटीएम', 'फोनपे', 'भारतपे', 'ज़ेरोधा', और 'ग्रो' जैसी कंपनियाँ अब आम लोगों के जीवन में शामिल हो चुकी हैं। स्टेटिस्टा की रिपोर्ट बताती है कि 2024 तक भारत में 87% लोग किसी न किसी फिनटेक सेवा का इस्तेमाल करने लगे थे, जो दुनिया के औसत से कहीं ज़्यादा है। वहीं पारंपरिक बैंक, जैसे भारतीय स्टेट बैंक, एचडीएफसी बैंक, और आईसीआईसीआई बैंक, आज भी करोड़ों लोगों को ऋण, जमा-निकासी और अन्य सेवाएं दे रहे हैं। इन बैंकों की शाखाएँ, एटीएम, और ग्राहक सेवा का एक बड़ा नेटवर्क है, जो खासकर ग्रामीण और वरिष्ठ नागरिकों के लिए काफी भरोसेमंद है। इसके अलावा, बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशा-निर्देशों के अनुसार काम करते हैं, जिससे उपभोक्ताओं को सुरक्षा और नियमों का भरोसा भी मिलता है।

हालांकि अब फिनटेक और बैंकों के बीच कई मामलों में तुलना होने लगी है। मसलन, फिनटेक ऐप्स पर ऋण लेना आसान और तेज़ हो गया है, जबकि बैंकों में अब भी दस्तावेज़, इंतजार और काग़ज़ी प्रक्रिया में समय लगता है। फिनटेक के डिज़ाइन और इंटरफ़ेस आधुनिक होते हैं, जिससे युवा और तकनीक से जुड़े लोग उनकी ओर ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। कई बार इन सेवाओं का शुल्क भी कम होता है या बिल्कुल नहीं होता, जो ग्राहकों के लिए फायदेमंद है।

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि बैंक और फिनटेक केवल एक-दूसरे से मुकाबला कर रहे हैं। असल में, अब इन दोनों के बीच साझेदारी भी तेजी से बढ़ रही है। कई बैंक अब फिनटेक कंपनियों के साथ मिलकर डिजिटल ऋण, यूपीआई पेमेंट और बीमा जैसी सेवाएं दे रहे हैं। बैंक जहाँ पूंजी और नियामकीय ज़िम्मेदारी संभालते हैं, वहीं फिनटेक कंपनियाँ ग्राहकों को आसान और तेज़ सेवा अनुभव देती हैं। इस तरह का मॉडल दोनों की ताकतों को जोड़ता है और उपभोक्ता को बेहतर सेवा मिलती है। ओपन बैंकिंग इसका एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें बैंक कुछ सीमित डेटा फिनटेक कंपनियों को साझा करते हैं ताकि वे ग्राहकों के लिए कस्टमाइज्ड सेवाएं बना सकें। इससे न सिर्फ सेवाएं बेहतर होती हैं, बल्कि ग्राहक के पास विकल्प भी बढ़ते हैं।

इन सबके बीच भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका भी बहुत अहम है। रिज़र्व बैंक ने फिनटेक कंपनियों के लिए रेगुलेटरी सैंडबॉक्स नाम की व्यवस्था शुरू की है, जिसमें वे नई सेवाओं का परीक्षण कर सकती हैं। डिजिटल ऋण पर 2022 में नए नियम बनाए गए, जिससे ग्राहकों का डेटा सुरक्षित रहे और कोई धोखा न हो। इसके अलावा पब्लिक टेक प्लेटफॉर्म फॉर फ्रिक्शनलेस क्रेडिट (पीटीपीएफ़सी) जैसे प्लेटफॉर्म बनाए गए हैं, ताकि आम आदमी को जल्दी, सस्ती और आसान ऋण सेवाएं मिल सकें।

हालांकि फिनटेक सेवाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है और ये सेवाएं जीवन को आसान बना रही हैं, लेकिन इनके

साथ कुछ गंभीर जोखिम और चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। सबसे बड़ी चिंता का विषय है साइबर धोखाधड़ी। जैसे-जैसे डिजिटल लेन-देन बढ़ा है, वैसे-वैसे धोखेबाजों द्वारा फ़र्ज़ी ऐप्स, नकली वेबसाइटों और फिशिंग (भ्रामक लिंक भेजने की प्रक्रिया) के ज़रिए उपभोक्ताओं की निजी जानकारी चुराने की घटनाएं भी बढ़ गई हैं। कई बार लोग अनजाने में किसी नकली फिनटेक ऐप को डाउनलोड कर लेते हैं, जो उनके बैंक खातों, कार्ड की जानकारी और व्यक्तिगत डेटा तक पहुँच बना लेता है।

डेटा गोपनीयता एक और गंभीर मुद्दा है। फिनटेक कंपनियाँ उपभोक्ताओं की आय, खर्च, ऋण इतिहास, व्यवहार और लोकेशन जैसी संवेदनशील जानकारियाँ एकत्रित करती हैं। यदि ये डेटा ठीक से संरक्षित न हो या किसी तीसरे पक्ष को अनाधिकृत रूप से साझा किया जाए, तो यह उपभोक्ता की निजता और वित्तीय सुरक्षा दोनों को खतरे में डाल सकता है। इसके अलावा, कई ऋण देने वाले ऐप्स बिना किसी वैध पंजीकरण के, बहुत अधिक ब्याज दरों और दबाव की रणनीतियों के साथ उपभोक्ताओं को कर्ज़ देने लगे हैं। ये ऐप्स अक्सर आरबीआई के नियमन के बाहर काम करते हैं और ऋण वापसी के लिए धमकी, सामाजिक बदनामी और साइबर उत्पीड़न जैसे अवैध तरीके अपनाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में ऐसी घटनाओं की संख्या में तेज़ी से वृद्धि हुई है, जिससे न केवल उपभोक्ता मानसिक रूप से प्रभावित हुए हैं, बल्कि कई बार उन्हें गंभीर आर्थिक संकट का सामना भी करना पड़ा है।

डिजिटल साक्षरता की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। ग्रामीण क्षेत्रों, बुज़ुर्ग नागरिकों और तकनीक से अनजान उपभोक्ताओं को यह समझना मुश्किल होता है कि कौन-सी ऐप सुरक्षित है, किस लिंक पर क्लिक करना है, और क्या जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। कई बार वे किसी तकनीकी गड़बड़ी या धोखे को पहचान नहीं पाते, जिससे वे फ्रॉड का शिकार हो जाते हैं। इनके लिए ग्राहक सहायता केंद्रों या हेल्पलाइन की पहुँच भी सीमित होती है, जिससे समय पर मदद नहीं मिल पाती। यह भी देखा गया है कि कई उपभोक्ता, शर्तों और नियमों को पढ़े बिना, बस एक क्लिक में ऋण ले लेते हैं, और बाद में उन्हें छिपे हुए शुल्क, दंड और जटिल पुनर्भुगतान नियमों का सामना करना पड़ता है। यह वित्तीय अनभिज्ञता एक नए प्रकार के कर्ज़ जाल (डेब्ट ट्रेप) को जन्म देती है, जिससे निकलना उनके लिए कठिन हो सकता है।

इन जोखिमों से निपटने के लिए न केवल मजबूत नियामक ढांचे की ज़रूरत है, बल्कि उपभोक्ताओं के बीच वित्तीय और डिजिटल शिक्षा को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आरबीआई, एनपीसीआई और अन्य संस्थाओं को इस दिशा में निरंतर अभियान चलाने होंगे, ताकि उपभोक्ता जागरूक और सतर्क रह सकें। इसके अलावा, फिनटेक कंपनियों की भी यह नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है कि वे पारदर्शिता बनाए रखें, उपभोक्ताओं की जानकारी का संरक्षण करें और किसी भी सेवा में स्पष्ट शर्तें और शुल्क पहले से ही दर्शाएँ।

निष्कर्षतः यह कहना सही होगा कि फिनटेक और पारंपरिक बैंकिंग दोनों की अपनी-अपनी खूबियाँ और सीमाएँ हैं। लेकिन अब प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग का दौर शुरू हो चुका है। बैंक फिनटेक से तकनीकी तेज़ी और सुविधा सीख रहे हैं और फिनटेक कंपनियाँ बैंकिंग से भरोसा और विनियामक अनुभव ले रही हैं। जब दोनों मिलकर काम करते हैं तो ग्राहक को फायदा ही फायदा होता है-सेवा भी बेहतर मिलती है और विकल्प भी बढ़ते हैं। इसलिए अब सवाल यह नहीं रह गया कि फिनटेक और बैंक कौन बेहतर है, बल्कि असली सवाल यह है कि ये दोनों मिलकर कैसे भारत को एक डिजिटल और समावेशी वित्तीय भविष्य की ओर ले जा सकते हैं। आने वाले समय में यही तालमेल भारतीय बैंकिंग की नई पहचान बनेगा।

निलेश कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक
गोरखपुर अंचल

बैंकिंग उद्योग में ऑनलाइन निगरानी प्रणाली का प्रभावीकरण

पूरी दुनिया में इंटरनेट बैंकिंग का तेजी से फैलाव इस बात का सूचक है कि बैंकिंग सेवाओं के लिए अन्य मौजूदा चैनलों की तुलना में यह एक प्रभावी वितरण चैनल है। बहरहाल, इंटरनेट, बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक वरदान ही नहीं साबित हुआ है, बल्कि लेन-देन की लागत कम करने के साथ साथ बैंकिंग क्षेत्र को नए नए जोखिम से सामना कराने वाला माध्यम भी साबित हो रहा है।

नियामक और पर्यवेक्षक इस बात से चिंतित हैं कि एक तरफ तो बैंकों को कुशल व लागत प्रभावी रहना है वहीं दूसरी तरफ जोखिम के विभिन्न प्रकार के प्रति जागरूक होकर बेहतर जोखिम प्रबंधन पर ध्यान भी देना है। ऑनलाइन बैंकिंग में प्रौद्योगिकी, जोखिम के नियंत्रण के लिए 'स्रोत और उपकरण' दोनों के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, जोखिम या उनके नियंत्रण का कोई अंतिम उपाय नहीं है, चूंकि दोनों ही लगातार विकसित होते रहते हैं।

ऑनलाइन बैंकिंग के विकास के फलस्वरूप एक नए स्तर के जोखिम का भी विकास हुआ, और इसलिए सिर्फ एक नया नियामक ढांचा ही नहीं बल्कि एक प्रभावी निगरानी तंत्र का गठन करना अवश्यंभावी था, जो कि बैंकिंग पर्यवेक्षण के लिए बनी बासेल समिति ने पहले से शुरू कर दिया था ।

पिछले कुछ वर्षों में, भारत में बैंकों के लिए जोखिम परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। विगत दिनों में बहुत सारे धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैं, जो वित्तीय क्षेत्र के लिए बहुत नुकसानदेह रहे हैं।

सीबीआई के द्वारा जारी एक आंकड़े के हिसाब से पिछले कुछ वर्षों में ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामलों में प्रारंभ की तुलना में अप्रत्याशित रूप से 200% गुना वृद्धि हुई है। ''व्यक्तिगत धोखेबाजों'' ने अब ''हैकर गिरोहों'' का रूप अपना लिया है, जो बैंकिंग ज्ञान से परिपूर्ण हैं तथा प्रौद्योगिकी व अंदरूनी जानकारी के संयोजन से धोखाधड़ी को अमल में ला रहे हैं।

ऑनलाइन धोखाधड़ी, बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख समस्याओं में से एक बन गया है। धोखाधड़ी की गतिविधि में तीव्र गति से वृद्धि यह भी दर्शाता है कि इसका पता लगाना और इसे रोकना कितना चुनौतीपूर्ण कार्य है, यही कारण है कि अपराधी लगातार अपनी रणनीति बदलकर बच निकलने में सफल होते हैं। वर्तमान में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में जो प्रमुख धोखाधड़ी की घटनाये हुई हैं वो इंटरनेट व क्रेडिट कार्ड से संबन्धित धोखाधड़ी, काले धन को वैध करना व इससे आतंकवादियों को वितपोषित करने वाली चुनौतियों के रूप में सामने आयीं हैं।

नियंत्रण और प्रक्रिया चेकलिस्ट के पारंपरिक मैनुअल तरीके से इस तरह के जोखिम को कम नहीं कर सकते हैं। इसलिए बैंकों में 'ऑनलाइन धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन' एक महत्वपूर्ण अभ्यास के रूप में उभरा है। इस परिदृश्य में, समय की मांग है कि लेन-देन की वास्तविक समय में निगरानी और उससे संभावित धोखाधड़ी का विश्लेषण किया जाये ।

नियामक की पहल

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा ऑनलाइन निगरानी के परिपेक्ष्य में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है- बैंकों के लिए ऑनलाइन धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन प्रणाली पर एक परिपत्र जारी करना। जिसमे बैंको के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों, ऑडिट समितियों और विशेष समितियों को नियंत्रण के प्रणालीगत विफलता व मौजूदा नियंत्रण में गंभीर कमजोरियां, जो धोखाधड़ी को सुगम बनाने के कारक हैं, उनके लिए जवाबदेह बनाया है। वित्तीय संस्थानों ने नियामक की आवश्यकताओं को अच्छी तरह से प्रतिबिम्बित किया व नीतियों और प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर के

धोखाधड़ी का पता लगाने और रोकने के लिए नए कौशल वाले व समर्पित टीमों का गठन किया।

भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में सूचना सुरक्षा, इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग, प्रौद्योगिकी जोखिम प्रबंधन और साइबर धोखाधड़ी पर कार्य समूह की अपनी रिपोर्ट जारी की है।

कार्य समूह की प्रमुख सिफारिशों में से कुछ निम्न सिफारिश शामिल हैं:–

- जोखिम आधारित लेन–देन की निगरानी या सतत निगरानी प्रक्रिया का पालन होना चाहिए
- त्वरित धोखाधड़ी का पता लगाने की क्षमता होनी चाहिए
- बैंकों को अपने धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन समूहों में लेनदेन के लिए निगरानी इकाई की स्थापना करनी चाहिए

धोखाधड़ी लेनदेन की निगरानी प्रणाली पर दिशा–निर्देश:–

- जोखिम की संवेदनशीलता के आधार पर निगरानी प्रक्रिया का पालन
- अपने ग्राहकों के बारे में अच्छी समझ निगरानी के तरीकों को लागू करने में सहायक है।
- धोखाधड़ी लेनदेन की निगरानी के प्रमुख दो घटक:–
- अगली पंक्ति के कर्मचारियों द्वारा निगरानी।
- पिछले लेन–देन की निगरानी–
  - संदिग्ध लेन–देन की पहचान
  - संदिग्ध लेन–देन का प्रबंधन
  - प्रणाली मानकों की नियमित समीक्षा
  - प्रबंधन प्रतिबद्धता

धोखाधड़ी लेनदेन की निगरानी में चुनौतियां

वित्तीय सेवा उद्योग में वास्तविक समय पर ऑपरेशन व ऑनलाइन चैनल से लेनदेन की बढ़ती मात्रा, बढ़ती हुई ऋण सुविधाएं, सुरक्षा और धोखाधड़ी से संबंधित चुनौतियां, नियामक द्वारा लगातार दरों में संशोधन व धोखाधड़ी के जोखिम प्रबंधन के लिए बढ़ता दबाब, किसी भी वित्तीय संस्था के लिए महत्वपूर्ण कार्यों की सूची में शीर्ष पर हैं।

ऐसी स्थिति में एक वित्तीय संस्थान को लेन–देन संबंधित निगरानी में निम्न चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता हैं:

- उभरते धोखाधड़ी के नये रुझान।
- बढ़ती जटिलता
- प्रौद्योगिकी सिस्टम की सीमाएं
- विविध डेटा स्रोत
- बदलती नियामक आवश्यकताओं का अनुपालन

भारतीय बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों ने धोखाधड़ी लेनदेन की निगरानी की जरूरत को स्वीकार कर लिया है। भारतीय रिजर्व बैंक के परिपत्र, तेजी से बढ़ रही धोखाधड़ी की रोशनी में बैंकों और वित्तीय संस्थानों में मजबूत धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन प्रथाओं की आवश्यकता पर जोर दे रहे हैं। बैंक भी अपने जोखिम प्रबंधन पद्धति व नियंत्रण में सुधार की प्रक्रिया पर ध्यान दे रहे हैं ।

जोखिम की पहचान, निगरानी व मूल्यांकन, ऑनलाइन बैंकिंग में एक सतत प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में पहले तो, बैंक प्रबंधन को किसी भी जोखिम की भयावहता और उसके असर का एक उचित विश्लेषण और उपयुक्त उपाय रखना चाहिए; वहीं दूसरी ओर बैंक प्रबंधन को जोखिम की सीमा सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि ये पता रहे की बैंक कितना घाटा बर्दाश्त कर सकता है और ऐसी समस्या में भी कैसे कार्यरत रह सकता है।

इस पहल के हिस्से के रूप में, ऑनलाइन बैंकिंग के क्षेत्र मे उत्पन्न विभिन्न प्रकार के जोखिम की पहचान एवं उस पर नियंत्रण निम्नलिखित रूप से की जा सकती है:–

1. संचालन जोखिम:– संचालन जोखिम धोखाधड़ी, प्रसंस्करण की त्रुटियों, प्रणाली के अवरोधों, या अन्य अप्रत्याशित घटनाओं के परिणामस्वरूप बैंकों को उत्पादों या सेवाओं को प्रदान करने में असमर्थ बनाता है। यह जोखिम प्रत्येक उत्पाद और सेवा की पेशकश में मौजूद है। संचालन जोखिम व इसके उपाय मुख्यत: निम्न तीन प्रकार के हैं:–

- **बैंकों का पूर्वानुमान और ग्राहकों की सटीक मात्रा का प्रबंधन–** इस जोखिम को कम करने के लिए बैंकों को सही बाजार अनुसंधान, पर्याप्त क्षमता व अच्छे मानक के सिस्टम का प्रयोग, उपयुक्त व आवश्यक विज्ञापन कार्य, पर्याप्त कर्मी तथा व्यवसाय में निरंतरता

सुनिश्चित करनी होगी।

- **प्रबंधन सूचना प्रणाली–** ऑनलाइन बैंकिंग की निगरानी के लिए उचित प्रबंधन की सूचना व जानकारी प्राप्त करना, सार्थक और स्पष्ट जानकारी के लिए नए सिस्टम को विन्यस्त/ स्थापित करना, जानकारी का एक प्रारूप मे होना ना कि ज़रूरत से ज़्यादा विवरण के साथ होना बहुत महत्वपूर्ण है।
- **आउटसोर्सिंग–** बैंक अब कई कार्य आउटसोर्सिंग के माध्यम से निष्पादित कराते हैं, जिससे संभवत: बैंक धीरे धीरे उस कार्य पर से नियंत्रण खोने लगते हैं। इसलिए बैंकों को आउटसोर्सिंग किए गए कार्यों के प्रति सजग रहना चाहिए।

2. सुरक्षा जोखिम:– बैंकों के महत्वपूर्ण जानकारी के माध्यम जैसे लेखा प्रणाली, जोखिम प्रबंधन प्रणाली, पोर्टफोलियो प्रबंधन प्रणाली, आदि के अनाधिकृत उपयोग के कारण सुरक्षा जोखिम पैदा होता है। सुरक्षा के उल्लंघन से बैंक को प्रत्यक्ष वित्तीय नुकसान हो सकता है। इसलिए इन जानकारियों तक अभिगम या इनके अनाधिकृत उपयोग पर नियंत्रण सर्वोपरि है और अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसको रोकने के लिए दो पक्षों के बीच हुये संचार का सबूत रहना चाहिए। ऐसे जोखिम के संभावित स्रोतों को संभालने के लिए बैंकों को तकनीकी रूप से सक्षम व सुसज्जित होना चाहिए। एक अच्छे सुरक्षा नियंत्रण प्रणाली का निर्माण, प्रणाली का सक्रिय परीक्षण व विकास, नए खतरों से सावधानी, मजबूत व्यावसायिक व बाजार के घटनाक्रम की जानकारी, सूचना के सुरक्षा दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. उचित तकनीक वाली वास्तुकला ढांचा व प्रणाली– यह उपयुक्त निगरानी, संचालन व बाजार संबन्धित जोखिम की संभावनाओं को नियंत्रण करने में महत्वपूर्ण है।

4. प्रतिष्ठा संबंधी जोखिम:– ऑनलाइन बैंकिंग में हुई गड़बड़ी व धोखाधड़ी, संस्थान के प्रतिष्ठा को खराब करने का जोखिम उत्पन्न करते हैं, इससे ग्राहकों के धन व विश्वास का नुकसान होता है। इस जोखिम से बचने के लिए संभव उपायों में बेहतर ग्राहक सेवा, सुविधा प्रदान करने के दौरान ग्राहकों के लिये उत्पन्न होती समस्याओं का त्वरित समाधान, सेवा के बीच में उत्पन्न अवरोध का आकस्मिक समाधान, वायरस की जाँच, नैतिक हैकर्स की तैनाती जैसे कदम बैंकों को प्रतिष्ठा संबंधी जोखिम से बचाने मे कारगर होंगे।

5. कानूनी / अनुपालन जोखिम:– कानूनी जोखिम का खतरा कानूनी या नियामक आवश्यकताओं का अनुपालन न करने से पैदा होता है। कानूनी तौर पर उपभोक्ता के लेनदेन व संचालन संबन्धित नियमों के खुलासे नोटिस बोर्ड व विभिन्न सूचना माध्यमों के जरिये सार्वजनिक रखने पड़ते हैं। इसी तरह ग्राहकों को जागरूक कर तथा उन्हें शिक्षित करके भी ऑनलाइन बैंकिंग में कानूनी जोखिम को कम किया जा सकता है। साथ साथ बैंकों को भी यह ध्यान रखना है की ग्राहक के खातों व लेनदेन की निजी जानकारी सिस्टम की कमी या भूलवश सार्वजनिक न हो जिससे कानून के अवमानना का खतरा तथा इससे बैंक को होने वाला नुकसान संभव हो सके।

6. काले धन को वैध करने का जोखिम:– काले धन को वैध करने के लिए अपने पहचान को छुपाना, पैसे के स्रोत व गंतव्य को छुपाना या गलत बताना अथवा प्रणाली की उलझन व कमियों को विशेषकर ध्यान मे रख कर वित्तीय लेनदेन करना एक बहुत बड़ा खतरा है। चूंकि ऑनलाइन बैंकिंग कहीं भी सुदूर क्षेत्र से करना आसान है, ऐसे गड़बडी वाले लेनदेन की निगरानी अत्यंत कठिन हो जाती है। इसका पता लगाने और ऐसे अवांछनीय आपराधिक गतिविधियों को रोकने के लिए पारंपरिक विधि के साथ साथ बैंकों को उचित ग्राहक की पहचान और स्क्रीनिंग तकनीक डिजाइन की जरूरत है। जिसमे लेखा परीक्षा ट्रेल्स विकसित कर, समय-समय पर नीतियों के अनुपालन की समीक्षा, प्रक्रियाओं का उचित संचालन और इंटरनेट लेनदेन में संदिग्ध गतिविधियों की रिपोर्ट करना आवश्यक है।

7. रणनीतिक जोखिम:– सामरिक जोखिम के हिसाब से ऑनलाइन बैंकिंग अपेक्षाकृत नया है और इस लिए इसमे कमी हो सकती है, इसकी क्षमता और प्रभाव के बारे में वरिष्ठ प्रबंधन के बीच इसकी समझ होना जरूरी है । खराब ऑनलाइन बैंकिंग योजना और अनुचित निवेश के फैसले

एक वित्तीय संस्था को सामरिक जोखिम मे डाल सकते हैं। नई तकनीक, नए आविष्कारों को जल्द से जल्द ग्राहकों के अनुरूप अपनाना समय की मांग है। कम खर्च, कम जटिलता वाले, यूजर फ्रेंडली ऑनलाइन बैंकिंग माध्यम तथा अतिरिक्त उत्पाद व सेवा प्रदान करने में सावधानी व चालाकी भी उतनी ही जरूरी है।

8. अन्य जोखिम:–

- **ऋण जोखिम–** ऋण जोखिम को कम करने के लिए ग्राहक की पहचान, ग्राहक के वित्तीय इतिहास, लेनदेन के रिकॉर्ड की ऑनलाइन जांच और सत्यापन के साथ साथ बंधन किए गए सम्पत्तियों की जांच व मूल्यांकन आदि भी बहुत आवश्यक है।
- इसी तरह **तरलता जोखिम, ब्याज दर जोखिम, चल निधि जोखिम, बाजार संबंधी जोखिम, व्यवसाय संबंधी जोखिम** भी कम करना या नियंत्रित करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

9. इसके अलावा **सीमा पार (क्रॉस बॉर्डर)** से जुड़े मुद्दे जो इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग और इलेक्ट्रॉनिक पैसे की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं, ऐसे जोखिम की निगरानी भी जरूरी है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन व ऑनलाइन बैंकिंग की विविधता बहुत चुनौतीपूर्ण है, इसलिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिपेक्ष्य मे इसका नियंत्रण होना चाहिए।

आज के प्रतिस्पर्धित बैंकिंग वातावरण में, जहां एक–दूसरे से आगे निकलने व बेहतर ग्राहक सेवा और सुविधा देने की होड़ लगी है, ऐसे समय मे बैंको को अपने इलेक्ट्रोनिक माध्यम को अति–सुरक्षित, अति संवेदनशील, ग्राहकों का प्रिय तथा समय अनुकूल बनाए रखना अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो गया है। ऑनलाइन निगरानी इस परिदृश्य में किसी भी जोखिम को कम करने तथा चुनौतियों से निपटने में जितनी सुगम व प्रभावी होगी उतना ही ऑनलाइन माध्यम विकसित व कारगर होगा।

राजेंद्र कुशवाह
वरिष्ठ प्रबंधक, नसरुल्लागंज शाखा
भोपाल अंचल

शिखर पर अकेला

खड़ा हूँ मैं एक ऊँची चट्टान पर,
जैसे आ पहुँचा हूँ दुनिया के शिखर पर।
तय किया है यह रास्ता एक अकेले राही की तरह,
न मैं बहुत युवा हूँ, न उम्र के उस पार गया।
सवालों से चौंका हुआ, स्वयं की खोज में खोया हुआ,
अपने भीतर ही अपने साथी को तलाशता हुआ।
भीतर जो दबा है गुबार, उसे बाहर उगलना चाहता हूँ,
इस शांत ऊँचाई पर खुद को बदलना चाहता हूँ।
छिप गया हूँ आकर इस एकांत बसेरे में,
भाग आया हूँ उस उलझन भरे अंधेरे में।
जहाँ सिर्फ पैसा ही इकलौता जूनून है,
और लालच की आग में खोया सारा सुकून है।
शायद मेरी बातें कड़वी और कठोर लगें,
पर स्वार्थ के भूखे लोग हर ओर शिकारी से लगें।
जैसे कोई जादू टोना उन पर छाया हुआ है,
जो सच है, वो कहना सब ने भुलाया हुआ है।.

सर्वेश विश्वरूप निकुम्भ
पिंपरी सैय्यद शाखा
नासिक अंचल

''उठो, जागो और लक्ष्य की ओर बढ़ो,
जब तक स्वयं पर विश्वास अडिग न हो जाए।
शक्ति शरीर में नहीं, आत्मा में बसती है,
और वही आत्मविश्वास राष्ट्र का निर्माण करता है।''

– स्वामी विवेकानंद

डिजिटल रुपया (e₹): भारत के मौद्रिक भविष्य का अगला चरण, ग्राहक अनुभव और बैंक ऑफ इंडिया की पहल

भारत डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में अग्रणी बन चुका है। 'एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस' (UPI) ने लेन-देन के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। इसी क्रम में, भारतीय रिज़र्व बैंक ने एक और क्रांतिकारी कदम उठाया है-केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC), जिसे हम 'डिजिटल रुपया' (e₹) कहते हैं।

यह केवल एक और भुगतान का जरिया नहीं है; यह हमारे भौतिक नोटों का डिजिटल स्वरूप है, जिसे सीधे केंद्रीय बैंक द्वारा जारी और विनियमित किया जाता है। हाल ही में, बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को सक्रिय रूप से सीबीडीसी ऐप स्थापित करवाने की पहल ने इस बात को पुख्ता कर दिया है कि डिजिटल रुपया अब प्रायोगिक चरण से निकलकर जन-सामान्य तक पहुँचने के लिए तैयार है। यह लेख भारतीय बैंकिंग प्रणाली में डिजिटल रुपये के महत्व, ग्राहकों पर इसके प्रभाव और वित्तीय भविष्य को आकार देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

डिजिटल रुपया क्या है?

डिजिटल रुपया (e₹) भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी एक डिजिटल मुद्रा है। यह कागजी मुद्रा या सिक्कों के बराबर ही मान्य है और इन्हें आपस में एक-दूसरे में बदला जा सकता है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह सामान्य डिजिटल बैंकिंग (जैसे एनईएफटी, आरटीजीएस, आईएमपीएस) से अलग कैसे है:

1. **केंद्रीय बैंक की गारंटी:** सामान्य डिजिटल बैंकिंग में, आप बैंकों के माध्यम से धनराशि अंतरित करते हैं। डिजिटल रुपये में, यह आरबीआई की सीधी देनदारी है, जैसे भौतिक नोट होते हैं।
2. **निजी मुद्राओं से भिन्न:** निजी डिजिटल मुद्राएं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित होती हैं और अत्यधिक अस्थिर होती हैं। डिजिटल रुपया आरबीआई द्वारा समर्थित एक स्थिर और संप्रभु मुद्रा है।

वर्तमान स्थिति: प्रायोगिक चरण से मुख्यधारा तक

आरबीआई ने थोक और खुदरा दोनों क्षेत्रों में डिजिटल रुपये के प्रायोगिक परीक्षण शुरू किए थे। थोक सीबीडीसी का उपयोग वित्तीय संस्थाओं के बीच बड़े लेन-देन के लिए किया

जा रहा है, जिससे निपटान लागत कम हो रही है।

खुदरा सीबीडीसी (e₹-R) का प्रायोगिक परीक्षण आम नागरिकों के लिए है। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के डिप्टी गवर्नर टी. रबी शंकर द्वारा 5 दिसंबर 2025 को जारी किए गए आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार, डिजिटल रुपया परीक्षण ने लेन-देन की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है, जिसमें लगभग 8 मिलियन (80 लाख) से अधिक उपयोगकर्ता सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। कुल लेनदेन मूल्य ₹28,000 करोड़ से अधिक हो चुका है, और कुल लेनदेन संख्या 120 मिलियन को पार कर गई है।

बैंक ऑफ इंडिया की पहल: ऐप स्थापित करवाना

यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है कि अब बैंक इस पहल को सक्रिय रूप से आगे बढ़ा रहे हैं। बैंक ऑफ इंडिया सहित कई प्रमुख वाणिज्यिक बैंकों ने अपने ग्राहकों को सीबीडीसी वॉलेट या ऐप स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया है।

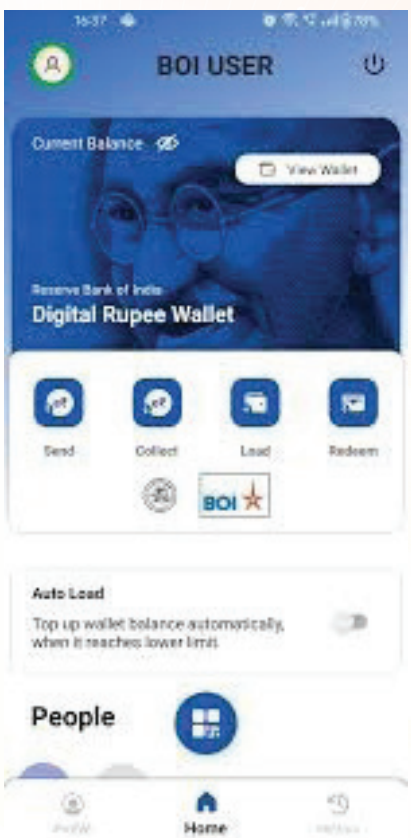

इस कदम के पीछे कई उद्देश्य हैं:

- **उपयोगकर्ता अनुभव परीक्षण:** वास्तविक उपयोगकर्ताओं से ऐप स्थापित करवाकर, बैंक और आरबीआई यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि लेन-देन प्रक्रिया सहज, सुरक्षित और सुविधाजनक हो। बैंक ऑफ इंडिया जैसी संस्थाएं इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया प्रदान कर रही हैं।
- **स्वीकार्यता दर बढ़ाना:** जितनी जल्दी लोग इसका उपयोग शुरू करेंगे, उतनी ही तेजी से इसे पूरे देश में लागू किया जा सकेगा।
- **आधारभूत संरचना तैयार करना:** बैंक ऑफ इंडिया सहित अन्य बैंक भविष्य की डिजिटल मुद्रा के लिए अपनी तकनीकी और परिचालन आधारभूत संरचना तैयार कर रहे हैं।

बैंकों के लिए यह केवल एक विनियामक निर्देश का पालन करना नहीं है, बल्कि भविष्य की बैंकिंग प्रणाली का हिस्सा बनना है। बैंक ऑफ इंडिया जैसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक की सक्रिय भागीदारी इस परियोजना की गंभीरता को दर्शाती है।

डिजिटल रुपये के लाभ: वित्तीय परिदृश्य में बदलाव

डिजिटल रुपया बैंकों और ग्राहकों दोनों के लिए क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है:

- **ग्राहकों के लिए:**
  - **तेज़ और सुरक्षित लेन-देन:** लेन-देन तुरंत और 24 x 7 संभव होगा।
  - **गोपनीयता:** नकदी की तरह, डिजिटल रुपये में भी लेन-देन कुछ हद तक गुमनाम हो सकते हैं (प्रायोगिक डिज़ाइन के आधार पर), जो उपयोगकर्ताओं को पसंद आता है।
- **बैंकों के लिए:**
  - **परिचालन लागत में कमी:** भौतिक नोटों की छपाई, वितरण, भंडारण और प्रबंधन की भारी लागत बचेगी।
  - **दक्षता:** बैंक ऑफ इंडिया जैसी संस्थाओं के लिए अंतर-बैंक लेन-देन और अंतर्राष्ट्रीय भुगतान अधिक कुशल और सस्ते हो जाएँगे।

भौतिक नोट (नकदी) बनाम डिजिटल रुपया (e₹) की तुलना

विशेषताएँ	भौतिक नोट (नकदी)	डिजिटल रुपया (e₹)
स्वरूप	मूर्त (कागज़/धातु), हाथ में पकड़ा जा सकता है	अमूर्त (इलेक्ट्रॉनिक), केवल डिजिटल वॉलेट में दिखता है
जारीकर्ता	भारतीय रिज़र्व बैंक	भारतीय रिज़र्व बैंक
लेन-देन का तरीका	हाथ से हाथ, भौतिक अंतरण	मोबाइल ऐप/वॉलेट के माध्यम से डिजिटल अंतरण
लेन-देन की गति	तत्काल (आमने-सामने)	तत्काल (भौगोलिक दूरी से स्वतंत्र)
लागत	छपाई, वितरण, भंडारण की उच्च लागत	छपाई की कोई लागत नहीं, इलेक्ट्रॉनिक वितरण
सुरक्षा	फटने, खोने, चोरी होने का जोखिम	साइबर सुरक्षा जोखिम, पर RBI द्वारा सुरक्षित
पहुँच	हर जगह सुलभ	इंटरनेट/मोबाइल की आवश्यकता (हालांकि ऑफलाइन सुविधा पर काम चल रहा है)
पारदर्शिता	गुमनाम	कुछ हद तक गुमनाम, लेकिन RBI द्वारा विनियमित

वित्तीय समावेशन का नया अध्याय: ग्रामीण भारत तक पहुँच

डिजिटल रुपये की क्षमता केवल शहरी तकनीकी रूप से जानकार उपभोक्ताओं तक ही सीमित नहीं है। भारत की असली ताकत उसके ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बसती है, जहाँ वित्तीय समावेशन अभी भी एक सतत प्रक्रिया है। 'डिजिटल इंडिया' दृष्टिकोण के तहत डिजिटल रुपया इस प्रक्रिया को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

- **भौगोलिक बाधाओं को पार करना:** डिजिटल रुपया उन क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं को पहुँचाने का एक प्रभावी माध्यम है जहाँ भौतिक बैंक शाखाएँ स्थापित करना महंगा या मुश्किल है। बैंक ऑफ इंडिया जैसी व्यापक शाखा नेटवर्क वाली संस्थाएं, इस डिजिटल मुद्रा के माध्यम से अपने अंतिम ग्राहक तक पहुँच सुनिश्चित कर सकती हैं। यह उन लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली का हिस्सा बनाएगा जो अब तक केवल नकदी पर निर्भर थे।
- **नकदी निर्भरता में कमी:** ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अधिकांश लेन-देन नकदी में होते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक के डेटा दर्शाते हैं कि देश में अभी भी नकदी का प्रचलन काफी अधिक है। डिजिटल रुपये का उपयोग करके, किसान, छोटे व्यापारी और श्रमिक औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में प्रवेश कर सकेंगे, जिससे न केवल पारदर्शिता आएगी बल्कि उन्हें ऋण और बीमा जैसी अन्य सेवाओं का लाभ भी मिल सकेगा। यह तकनीक सही मायने में 'जन-धन' को 'जन-गण' से जोड़ने का काम करेगी।

ऑफ़लाइन कार्यक्षमता: बिना इंटरनेट भी संभव लेन-देन

डिजिटल रुपये की एक सबसे नवीन और महत्वपूर्ण विशेषता, जिस पर भारतीय रिज़र्व बैंक सक्रिय रूप से काम कर रहा है, वह इसकी ऑफ़लाइन क्षमता है। भारत के कई हिस्सों में आज भी इंटरनेट कनेक्टिविटी एक चुनौती है, और बिजली कटौती एक आम समस्या है।

- **निर्बाध लेन-देन:** ऑफ़लाइन कार्यक्षमता का मतलब है कि उपयोगकर्ता बिना सक्रिय इंटरनेट या मोबाइल नेटवर्क कनेक्शन के भी डिजिटल रुपया भेज और प्राप्त कर सकेंगे। RBI इस सुविधा के तकनीकी पहलुओं पर काम कर रहा है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि नेटवर्क न होने पर भी लेन-देन सुरक्षित रहें।

- **तकनीकी लाभ:** यह सुनिश्चित करता है कि डिजिटल भुगतान प्रणाली कभी भी ठप्प न हो। यह सुविधा आपातकालीन स्थितियों (जैसे प्राकृतिक आपदा) में या दूरदराज के इलाकों में बेहद उपयोगी साबित होगी। बैंक ऑफ इंडिया के ग्राहक, चाहे वे किसी भी स्थान पर हों, वित्तीय सेवाओं से जुड़े रहेंगे। यह सुविधा डिजिटल रुपये को UPI से भी एक कदम आगे ले जाती है, क्योंकि UPI को काम करने के लिए इंटरनेट की आवश्यकता होती है। यह डिजिटल रुपये की विश्वसनीयता और उपयोगिता को कई गुना बढ़ा देता है।

चुनौतियाँ और भविष्य की राह

हालांकि डिजिटल रुपये के फायदे स्पष्ट हैं, लेकिन इस महत्वाकांक्षी यात्रा में कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिन पर ध्यान देना आवश्यक है:

1. साइबर सुरक्षा और तकनीकी जोखिम: डिजिटल मुद्रा का पूरा तंत्र डिजिटल है, इसलिए साइबर हमले, डेटा उल्लंघन और धोखाधड़ी एक प्रमुख चिंता है। भारतीय रिज़र्व बैंक और बैंकों को अपने सीबीडीसी वॉलेट और अंतर्निहित ब्लॉकचेन जैसी तकनीक की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय करने होंगे ।

2. डिजिटल विभाजन और वित्तीय साक्षरता: आम जनता, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों को इस नई मुद्रा के उपयोग, सुरक्षा उपायों और लाभों के बारे में शिक्षित करना एक बड़ी आवश्यकता होगी।

राजभाषा की शक्ति: इस शिक्षा अभियान में राजभाषा हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग महत्वपूर्ण होगा, ताकि देश के हर कोने में बैठे व्यक्ति को 'डिजिटल रुपया वॉलेट' और इसके लाभों के बारे में पता चले। बैंक ऑफ इंडिया जैसी संस्थाओं के लिए यह एक अवसर है कि वे सरल और स्थानीय भाषा में जागरूकता फैलाकर ग्राहक विश्वास जीतें।

3. अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य और सीमा पार भुगतान: आरबीआई केवल घरेलू उपयोग तक ही सीमित नहीं है। केंद्रीय बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (BIS) के तहत द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यवस्थाओं के माध्यम से सीमा पार डिजिटल रुपया भुगतानों की संभावना तलाश रहा है । यह पहल अंतरराष्ट्रीय व्यापार की लागत और समय को नाटकीय रूप से कम कर सकती है, जिससे भारतीय रुपये की वैश्विक स्थिति मजबूत होगी।

निष्कर्ष

बैंक ऑफ इंडिया और अन्य बैंकों द्वारा सक्रिय रूप से सीबीडीसी ऐप स्थापित करवाना भारत के मौद्रिक इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत का संकेत है। डिजिटल रुपया केवल तकनीक का खेल नहीं है; यह वित्तीय समावेशन को मजबूत करने, अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता लाने और भारत को वैश्विक डिजिटल वित्त में अग्रणी बनाने का एक महत्वपूर्ण कदम है।

डिजिटल रुपया एक कानूनी निविदा है, जिसे भारत सरकार और आरबीआई द्वारा पूर्ण समर्थन प्राप्त है। यह सुनिश्चित करता है कि इसका मूल्य भौतिक मुद्रा के बराबर है और यह पूरी तरह विनियमित ढांचे के तहत काम करता है, जिससे ग्राहकों का विश्वास बना रहता है।

जैसे यूपीआई ने भुगतान प्रणाली को बदला, वैसे ही डिजिटल रुपया मुद्रा के स्वरूप को बदल देगा। बैंकिंग क्षेत्र इस परिवर्तन के केंद्र में है, और यह सुनिश्चित करना बैंकों का दायित्व है कि वे इस भविष्योन्मुखी पहल को सफलतापूर्वक अपनाएँ और ग्राहकों को इसके लिए तैयार करें। भारत एक 'नकदी रहित' समाज की ओर नहीं, बल्कि एक 'कम नकदी उपयोग' वाले डिजिटल समाज की ओर बढ़ रहा है, जहाँ डिजिटल रुपया एक मजबूत स्तंभ बनेगा।

''कागज़ की जगह अब, मोबाइल में रुपया आएगा; आरबीआई का यह कदम, नया दौर लाएगा।''

अमित कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक, सतर्कता विभाग
मुंबई दक्षिण अंचल

भारत में मेगा बैंक मर्जर और प्रबंधन एवं कर्मचारियों की भूमिका

भारत की बैंकिंग प्रणाली देश की आर्थिक रीढ़ है। समय के साथ यह प्रणाली लगातार विकसित हुई है; प्राइवेट बैंकों का उदय, डिजिटलीकरण, और वित्तीय समावेशन के प्रयासों ने इसे नई दिशा दी है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से एक और बड़ा बदलाव तेजी से चर्चा में है; मेगा बैंक मर्जर यानी बड़े बैंकों का विलय।

सरकार और आरबीआई के दृष्टिकोण से यह कदम केवल बैंकों का आकार बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, वित्तीय रूप से सशक्त और ग्राहक-हितैषी बनाने की दिशा में उठाया जा रहा है।

1. मेगा बैंक मर्जर की आवश्यकता

• भारतीय अर्थव्यवस्था के आकार के अनुरूप बैंकिंग सामर्थ्य का निर्माण:-

भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। इतनी बड़ी अर्थव्यवस्था को सपोर्ट करने के लिए मजबूत पूंजी आधार वाले मेगा बैंकों की आवश्यकता है, जो बड़े प्रोजेक्ट्स को वित्तीय सहायता दे सकें। छोटे-छोटे बैंकों की सीमित क्षमता के कारण बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर या अंतरराष्ट्रीय निवेश प्रोजेक्ट्स को लोन देना कठिन होता है। मर्जर से यह चुनौती कम होती है।

• एनपीए (Non Performing Assets) नियंत्रण और दक्षता प्रबंधन:-

पिछले दशक में बैंकों के लिए एनपीए एक गंभीर समस्या रही है। जब बैंक मर्ज होते हैं, तो उनकी जोखिम प्रबंधन प्रणाली (Risk Management System) मजबूत होती है और लोन रिकवरी की प्रक्रिया एकीकृत होकर अधिक प्रभावी बन जाती है। बड़े बैंक बेहतर निगरानी और क्रेडिट मूल्यांकन तंत्र विकसित कर सकते हैं।

• लागत में कटौती और संचालन क्षमता में वृद्धि:-

मर्जर से शाखाओं, एटीएम नेटवर्क, टेक्नोलॉजी और बैक-ऑफिस कार्यों में डुप्लीकेशन घटता है। इससे संचालन लागत कम होती है और सेवा की गुणवत्ता बेहतर होती है। बड़े बैंक इकोनॉमी ऑफ स्केल का लाभ उठाकर अधिक कुशलता से काम कर सकते हैं।

• वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयारी:-

वर्तमान में भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक विश्व के शीर्ष 100 बैंकों में मुश्किल से शामिल हो पाते हैं। लेकिन मर्जर के बाद स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की तरह कुछ बैंक वैश्विक स्तर पर भी प्रतिस्पर्धी आकार हासिल कर पाए हैं। इससे भारत की बैंकिंग छवि मजबूत होती है।

• डिजिटल ट्रांजिशन को गति देना

एक बड़े बैंक के पास डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश करने के अधिक अवसर होते हैं। मर्जर से बैंक फिनटेक साझेदारी, AI आधारित सेवा मॉडल, और साइबर सुरक्षा ढांचे में निवेश कर सकते हैं। इससे ग्राहक अनुभव बेहतर होता है।

2. मेगा बैंक मर्जर के अब तक के उदाहरण और परिणाम

भारत में पहले भी कई बैंक मर्जर किए जा चुके हैं। उदाहरण के लिए:

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) ने अपने पाँच एसोसिएट बैंकों और भारतीय महिला बैंक को मर्ज किया।
- 2019 में सरकार ने 10 पब्लिक सेक्टर बैंकों को मिलाकर 4 बड़े बैंक बनाए; जैसे पंजाब नेशनल बैंक, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया का विलय।

अप्रैल 2020 में हुए प्रमुख विलय

अप्रैल 2020 में, एक बार फिर बड़े विलयों की लहर चली। ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया का पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) के साथ विलय हो

गया, जिससे यह शाखा नेटवर्क के आधार पर देश का दूसरा सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बन गया। इसी अवधि में, दो और महत्वपूर्ण विलय हुए केनरा बैंक ने सिंडिकेट बैंक का अधिग्रहण कर चौथा सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बन गया, और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का आंध्र बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक के साथ विलय होकर पांचवां सबसे बड़ा बैंक बन गया। इसी वर्ष, इंडियन बैंक ने इलाहाबाद बैंक का विलय कर लिया और सातवें सबसे बड़े सरकारी बैंक के रूप में उभरा।

इन मर्जर के बाद बैंकों की पूंजी स्थिति सुधरी, लेकिन प्रारंभिक चरण में मानव संसाधन, सांस्कृतिक एकीकरण और सिस्टम मिलान (system integration) जैसी चुनौतियाँ सामने आईं।

3. आगामी वर्षों में मेगा मर्जर की संभावना

सरकार की नीति कम बैंकों, लेकिन मजबूत बैंकों की दिशा में है। आने वाले वर्षों में कुछ और मर्जर की संभावनाएँ इस कारण हैं:

- कई छोटे सरकारी बैंकों का बाज़ार हिस्सा घटता जा रहा है।
- डिजिटल बैंकिंग और फिनटेक प्रतिस्पर्धा ने कमजोर बैंकों पर दबाव बढ़ाया है।
- आरबीआई और वित्त मंत्रालय का लक्ष्य है कि भारत में 3–4 ग्लोबल साइज पब्लिक सेक्टर बैंक हों।
- पूंजी पर्याप्तता और टेक्नोलॉजी निवेश के लिए संसाधनों का केंद्रीकरण जरूरी है।

इसलिए निकट भविष्य में और दो या तीन बड़े मर्जर देखने को मिल सकते हैं।

4. मर्जर से मिलने वाले संभावित परिणाम

ग्राहकों के लिए:–

- एकीकृत नेटवर्क से किसी भी शाखा से सेवा प्राप्त करना आसान होगा।
- डिजिटल बैंकिंग की सुविधाएँ बढ़ेंगी।
- लोन और डिपॉजिट उत्पादों में प्रतिस्पर्धा से ब्याज दरें अधिक अनुकूल बनेंगी।

बैंकों के लिए:–

- पूंजी आधार मजबूत होगा।
- जोखिम विभाजन (Risk Diversification) संभव होगा।
- टेक्नोलॉजी और साइबर सुरक्षा में सामूहिक निवेश से लागत कम होगी।
- वैश्विक उधारदाताओं व निवेशकों के बीच भरोसा बढ़ेगा।

अर्थव्यवस्था के लिए:–

- बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स को लोन देना आसान होगा।
- वित्तीय स्थिरता बढ़ेगी।
- सरकार के वित्तीय सुधार एजेंडे को गति मिलेगी।

5. मर्जर की चुनौतियाँ:–

- सांस्कृतिक टकराव (Cultural Clash): अलग–अलग बैंकों की कार्यसंस्कृति और नियम एक–दूसरे से भिन्न होते हैं।
- कर्मचारियों की असुरक्षा: नौकरी की स्थिति, प्रमोशन और पोस्टिंग को लेकर कर्मचारियों में असमंजस रहता है।
- तकनीकी एकीकरण: विभिन्न कोर बैंकिंग सिस्टम (CBS) को जोड़ना जटिल होता है।
- ग्राहक असुविधा: शुरुआती चरण में सेवा में बाधाएँ आ सकती हैं।
- प्रबंधन समन्वय: नेतृत्व, नीति और प्रक्रियाओं का समन्वय स्थापित करना समय लेता है।

6. प्रबंधकीय विजन :–

स्पष्ट विज़न और संचार

मर्जर का उद्देश्य और लाभ कर्मचारियों व ग्राहकों तक स्पष्ट रूप से पहुँचाना चाहिए।

एक संचार रणनीति (Communication Strategy) बनानी चाहिए जिससे अफवाहों को रोका जा सके और विश्वास कायम हो।

मानव संसाधन नीतियों में पारदर्शिता

कर्मचारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, ट्रांसफर और वेतन संबंधी निर्णय निष्पक्षता से लिए जाएँ।

HR विभाग को मानसिक सुरक्षा (Psychological Safety) का वातावरण तैयार करना होगा।

सिस्टम और टेक्नोलॉजी का एकीकरण

IT विभाग को समयबद्ध योजना बनाकर कोर बैंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सुरक्षा प्रोटोकॉल को एकीकृत करना होगा।

इसमें डेटा माइग्रेशन, पासवर्ड नीति, और साइबर सुरक्षा का ध्यान रखना आवश्यक है।

सांस्कृतिक एकीकरण कार्यक्रम

मर्जर के बाद टीम बिल्डिंग, लीडरशिप ट्रेनिंग और सांस्कृतिक वर्कशॉप आयोजित करनी चाहिए ताकि कर्मचारियों के बीच आपसी तालमेल बने।

ग्राहक–सेवा केंद्रित नीति

मर्जर के दौरान ग्राहक सेवाओं में व्यवधान न आए, इसके लिए विशेष Customer Care Cells बनाए जाएँ।

ग्राहक शिकायत निवारण की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।

7. कर्मचारियों (Staff) की भूमिका

परिवर्तन एक अवसर:–

मर्जर के बाद नई जिम्मेदारियाँ, नए रोल और नई तकनीक अपनाने के अवसर मिलते हैं। कर्मचारियों को सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

नवीन कौशल (Skill Upgradation):–

डिजिटल बैंकिंग, डेटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्योरिटी, और ग्राहक संबंध प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण लेना जरूरी होगा।

टीम भावना का विकास:–

अब बैंक एक इकाई के रूप में काम करेगा, इसलिए सहयोग और टीमवर्क अनिवार्य है।

विभिन्न पृष्ठभूमि के सहकर्मियों के साथ तालमेल बनाना संगठन की सफलता की कुंजी है।

ग्राहक हित सर्वोपरि:–

मर्जर के समय ग्राहकों में भ्रम या असुविधा हो सकती है। ऐसे में कर्मचारियों को ग्राहकों को सही जानकारी और भरोसा दिलाना होगा।

नवाचार के लिए खुलापन:–

कर्मचारियों को नई प्रक्रियाओं, डिजिटल टूल्स, और ऑटोमेशन को अपनाने में सक्रिय रहना चाहिए।

8. दीर्घकालिक दृष्टिकोण

भारत का बैंकिंग भविष्य कंसॉलिडेशन (Consolidation) की दिशा में है।

सरकार और आरबीआई दोनों ही एक ऐसी बैंकिंग संरचना चाहते हैं जहाँ कुछ मजबूत बैंक देश की वृद्धि को गति दें।

लेकिन केवल मर्जर से सफलता नहीं मिलेगी; मानव संसाधन, नेतृत्व, और ग्राहक विश्वास इस यात्रा के प्रमुख स्तंभ हैं।

यदि प्रबंधन दूरदर्शिता के साथ योजना बनाए और कर्मचारी अपने दायित्वों को समझकर कार्य करें, तो भारत में मेगा बैंक मर्जर न केवल सफल होंगे, बल्कि देश की वित्तीय स्थिरता और विकास की आधारशिला भी बनेंगे।

निष्कर्ष:–

मेगा बैंक मर्जर केवल संस्थाओं का विलय नहीं, बल्कि एक नए वित्तीय युग की शुरुआत है।

यह भारतीय बैंकिंग को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने, ग्राहकों को बेहतर सेवा देने, और अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने का अवसर है।

हालाँकि यह प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण है, लेकिन सही रणनीति, सकारात्मक दृष्टिकोण, और दक्ष नेतृत्व के माध्यम से इसे एक राष्ट्रीय आर्थिक सफलता की कथा बनाया जा सकता है।

राजीव कुमार गुप्ता
पूर्व महाप्रबंधक

संविधान दिवस : महत्वपूर्ण तथ्य

- भारतीय संविधान विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान है।
- संविधान सभा का गठन कैबिनेट मिशन प्लान के तहत हुआ था।
- संविधान सभा में कुल 389 सदस्य थे ।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को हुई थी।
- संविधान सभा के पहले अस्थायी अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा थे।
- संविधान सभा के पहले स्थायी अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे।
- संविधान का प्रारूप संविधान सभा के सलाहकार बी.एन राव ने तैयार किया था।
- संविधान तैयार करने पर कुल लागत लगभग 64 लाख रुपए थी।
- संविधान सभा की प्रारूप समिति का गठन 29 अगस्त 1947 को हुआ था।
- संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. बी. आर. अंबेडकर थे।
- संविधान सभा की प्रारूप समिति में कुल 7 सदस्य थे।
- संविधान बनने में 2 साल 11 महीने 18 दिन का समय लगा।
- संविधान सभा की कुल 11 सत्रों में बैठकें हुईं।
- संविधान सभा की कुल 11 सत्रों में 165 बैठकें संविधान निर्माण के लिए आयोजित की गईं।
- संविधान सभा की अंतिम बैठक 24 जनवरी 1950 को हुई।
- संविधान की मूल प्रति पर 284 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए।
- संविधान सभा में 15 महिलाएँ थीं।
- संविधान सभा की 15 महिला सदस्यों के नाम:- हंसा मेहता, सरोजिनी नायडू, दुर्गाबाई देशमुख, राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, बेगम एजाज रसूल, विजयलक्ष्मी पंडित, अम्मू स्वामीनाथन, दाक्षायनी वेलायुधन, लीला रॉय, मालती चौधरी, रेणुका रे, पुर्णिमा बनर्जी, कमला चौधरी, एनी मस्करेन।
- मूल संविधान हाथ से लिखा गया था। इसे प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने सुंदर कैलिग्राफी में तैयार किया।
- संविधान की मूल प्रति में बनी चित्रकलाएं नंदलाल बोस और शांतिनिकेतन के कलाकारों ने बनाई थी।
- संविधान के हिंदी संस्करण का लेखन वसंत कृष्ण वैध ने किया था।
- मूल संविधान में 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियाँ थीं।
- संविधान सभा में सबसे युवा सदस्य 35 वर्ष की दाक्षायनी वेलायुधन थी।
- संविधान का पहला शब्द 'We' (हम) है।
- संविधान सभा ने राष्ट्रीय ध्वज को 22 जुलाई 1947 को अपनाया था।
- मूल संविधान संसद पुस्तकालय में सुरक्षित रखा गया है।
- संविधान सभा में कुल 22 समितियाँ थीं।
- 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में अपनाया गया था। इस कारण प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- संविधान 26 नवंबर 1949 को पारित हुआ था। इसी दिन को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- संविधान की प्रस्तावना भारत को संप्रभु, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करती है।
- संविधान में अनुच्छेद 32 को 'संविधान की आत्मा' कहा गया है।
- संविधान सभा द्वारा 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रगान 'जन गण मन' को आधिकारिक रूप से स्वीकार किया गया।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे / Executive Directors Visit

श्री पी आर राजगोपाल ने अहमदाबाद अंचल में उद्यमी विकास महोत्सव को संबोधित किया।

श्री पी आर राजगोपाल ने अमरावती आंचलिक कार्यालय का शिलान्यास किया।

श्री पी आर राजगोपाल ने दिनांक 26.11.2025 को आयोजित TU CIBIL MSME यूजर ग्रुप कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया।

श्री सुब्रत कुमार ने दिनांक 03.10.2025 को कोयंबटूर अंचल में ग्राहक आउटरीच कार्यक्रम को संबोधित किया।

श्री सुब्रत कुमार ने जमशेदपुर अंचल में टाउन हॉल मीटिंग को संबोधित किया।

श्री सुब्रत कुमार ने दिनांक 29.11.2025 को पटना अंचल में 'बैंकिंग में धोखाधड़ी, जोखिम और नैतिकता' विषय पर एक कार्यशाला को संबोधित किया।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे / Executive Directors Visit

Shri Subrat Kumar visited Varanasi Zone.

Shri Rajiv Mishra visited Indore Zone.

Shri Rajiv Mishra visited Lucknow Zone on 13.11.2025 and addressed Town Hall Meeting.

Shri Pramod Kumar Dwibedi visited FGMO Bhopal.

Shri Pramod Kumar Dwibedi visited Indore Zone.

Shri Pramod Kumar Dwibedi visited Nagpur Zone and addressed a customer outreach programme

मुख्य महाप्रबंधकों/ महाप्रबंधकों के दौरे / CGM / GM Visit

मुख्य महाप्रबंधकों/ महाप्रबंधकों के दौरे / CGM / GM Visit

Lucknow

Delhi NCR

Indore

Mumbai South

Solapur

Siliguri

Bhopal

Vijayawada

MoU Signed during the December Quarter

On 23 December 2025, Bank of India signed an MoU with the Government of Jharkhand to provide a dedicated Salary and Pension Account Package for state employees and pensioners, ensuring seamless disbursement, digital access, and added welfare benefits.

Bank of India, Varanasi Zone, signed an MoU with North Eastern Railway, Varanasi Division for the Government Salary Account, aimed at strengthening CASA, Retail TDR, and sustainable deposit growth.

CSR Activities during the December Quarter

Bank of India, Dhanbad Zonal Office, under its CSR initiatives, supported the Malnutrition Treatment Centre (MTC), Dhanbad, and an old age home, reinforcing its commitment to child nutrition, senior citizen welfare, and community health.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025/ Vigilance Awareness Week-2025

Top Management and the Chief Vigilance Officer taking the integrity pledge

Case Studies Booklet released by Top Management and the CVO

Human chain formation carried out with the message "Vigilance: Our Shared Responsibility".

संविधान दिवस–2025/ Constitution Day 2025

On the occasion of Constitution Day, Top Executives took the pledge.

आंचलिक प्रबंधक सम्मेलन / Zonal Managers' Conference

"वर्ष 2025 का महाप्रबंधक" पुरस्कार

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के माननीय उद्योग मंत्री, श्री नंद गोपाल नंदी जी द्वारा एफ़जीएमओ लखनऊ के महाप्रबंधक श्री अमरेंद्र कुमार जी को सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों में वर्ष 2025 का महाप्रबंधक : GENERAL MANAGER OF THE YEAR पुरस्कार प्रदान किया गया।

इसके अलावा इंडियन इन्वेस्टर्स फेडरेशन द्वारा आयोजित 10वीं बैंकिंग लीडरशिप समिति एवं अवार्ड 2025 समारोह में हमारे बैंक को सीएम युवा रोजगार योजना, पीएमईजीपी, पीएम मुद्रा योजना, सीडी अनुपात एवं कृषि के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु पुरस्कार दिया गया है।

यह हम सभी के लिए गौरव की बात है और प्रेरणादायक है। यह सम्मान हमें बैंक के कारोबार में वृद्धि और प्रगति हेतु और अधिक परिश्रम एवं योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

The Chief Executive of Bank of India, Japan Center, Shri Amit Kumar paid a courtesy visit to the Embassy of India to extend a warm welcome to Her Excellency Ambassador Ms. Nagma Mohammed Mallick on her recent appointment to Japan.

"जलवायु परिवर्तन और वित्तपोषण: चुनौतियाँ, अवसर और सतत भविष्य की राह"

आज जब मनुष्य आकाश की ओर देखता है तो बदलते रंगों के साथ बदलती जलवायु की चिंता भी उसके मन में उभरती है। कभी असामान्य गर्मी, कभी अनचाही बारिश, तो कभी लंबा सूखा – ये सब संकेत हैं कि पृथ्वी का जलवायु तंत्र संतुलन खो रहा है। यह स्थिति केवल वैज्ञानिक बहस का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन चुकी है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए केवल तकनीक और नीतियाँ पर्याप्त नहीं, बल्कि इसके लिए मजबूत वित्तीय ढांचे की आवश्यकता होती। "जलवायु परिवर्तन से मुकाबले हेतु वित्तपोषण" यही वह कड़ी है, जो अच्छे इरादों को ज़मीन पर उतरने वाले ठोस प्रयासों में बदल सकती है।

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख प्रभाव:

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव बहुस्तरीय है – यह खेतों से लेकर शहरों तक, समुद्री तट से लेकर पहाड़ी क्षेत्रों तक, हर स्तर पर परिवर्तन ला रहा है।

- **मौसम की अनियमितता:** कभी अचानक तेज़ वर्षा, तो कभी लंबे समय तक सूखा, जिससे खेती की पारंपरिक समायोजन क्षमता कमजोर हो रही है।
- **तापमान में वृद्धि:** औसत तापमान बढ़ने से हीट वेव, ग्लेशियर पिघलाव और समुद्र स्तर में वृद्धि जैसी समस्याएँ तेज़ हो रही हैं।
- **प्राकृतिक आपदाएँ:** बाढ़, चक्रवात, भू-स्खलन और सूखा अधिक बार और अधिक तीव्र रूप में दिखाई दे रहे हैं, जिससे जान-माल की क्षति बड़े पैमाने पर हो रही है।

इन प्रभावों का परिणाम केवल पर्यावरणीय क्षति तक सीमित नहीं, बल्कि यह सामाजिक असमानता, पलायन, खाद्य असुरक्षा और आर्थिक अस्थिरता के रूप में भी सामने आ रहा है।

कृषि व ग्रामीण जीवन पर असर: कृषि क्षेत्र जलवायु परिवर्तन की पहली और सबसे सीधी मार झेल रहा है।

- बदलते वर्षा चक्र के कारण बुवाई का समय, फसल की अवधि और पैदावार का अनुमान लगभग अनिश्चित हो गया है।
- लंबे सूखे और अचानक बाढ़ से फसलें नष्ट हो जाती हैं, भूजल स्तर गिरता है और सिंचाई व्यवस्था पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है।
- छोटे और सीमांत किसानों की आय में लगातार अनिश्चितता बढ़ती है, जिससे ग्रामीण ऋणग्रस्तता और आत्महत्या जैसी विकट सामाजिक समस्याएँ भी जन्म लेती हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कमज़ोर वित्तीय बुनियाद जलवायु झटकों को सहने की क्षमता कम कर देती है, इसलिए यहाँ अनुकूलन (Adaptation) और लचीलेपन (Resilience) के लिए लक्षित वित्तपोषण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

पर्यावरणीय आपदाएँ और आर्थिक बोझ: बढ़ते समुद्री स्तर और अत्यधिक मौसम घटनाएँ जलवायु परिवर्तन की सबसे स्पष्ट चेतावनियाँ हैं।

- तटीय क्षेत्रों में भूमि का क्षरण, खारे पानी का भीतर तक प्रवेश और जन-बसावट का विस्थापन, सरकारों पर पुनर्वास और मुआवज़े का भारी खर्च थोपते हैं।
- चक्रवात, अत्यधिक वर्षा और भूस्खलन जैसी आपदाएँ सड़क, बिजली, जल आपूर्ति और संचार जैसी आधारभूत संरचनाओं को बार-बार नुकसान पहुँचाती हैं, जिसका अर्थ है कि विकास हेतु जुटाया गया धन बार-बार

पुनर्निर्माण में खर्च हो जाता है।

इस प्रकार जलवायु आपदाएँ केवल वर्तमान बजट पर ही नहीं, बल्कि दीर्घकालिक विकास योजनाओं और सार्वजनिक वित्त की स्थिरता पर भी दबाव डालती हैं।

जलवायु वित्तपोषण : अर्थ और प्रकार

जलवायु वित्तपोषण का सीधा अर्थ है – ऐसे वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था, जो जलवायु परिवर्तन के शमन (Mitigation) और अनुकूलन (Adaptation) के लिए योजनाओं, परियोजनाओं और नीतियों को समर्थन दें। इन्हें, इस प्रकार समझे जा सकते हैं:

- **सरकारी वित्त** (Public finance) : राष्ट्रीय बजट, विशेष योजनाएँ, कर रियायतें, अनुदान और सब्सिडी, जिनके माध्यम से सरकार नवीकरणीय ऊर्जा, हरित अवसंरचना और आपदा प्रबंधन को बढ़ावा देती है।
- **अंतरराष्ट्रीय सहायता:** बहुपक्षीय कोष, विकास बैंक, और विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के लिए प्रदान की जाने वाली वित्तीय व तकनीकी सहायता, जो वैश्विक जलवायु समझौतों का हिस्सा होती है।
- **निजी निवेश:** कॉरपोरेट क्षेत्र, बैंक, वेंचर कैपिटल और हरित बॉन्ड जैसे साधनों के जरिए नवीकरणीय ऊर्जा, स्वच्छ प्रौद्योगिकी, हरित भवन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी आदि में किया गया निवेश।

इन सभी स्रोतों का समन्वित और रणनीतिक उपयोग ही जलवायु परिवर्तन से मुकाबले की वास्तविक शक्ति बन सकता है।

जलवायु वित्तपोषण की अनिवार्यता

जलवायु परिवर्तन से लड़ाई केवल ''नीति दस्तावेज़'' या ''लक्ष्य तय करने'' तक सीमित नहीं रह सकती, इसे वित्तीय समर्थन के बिना लागू नहीं किया जा सकता। इन्हें निम्नलिखित तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता है:-

- **अनुसंधान व नवाचार के लिए धन:** नई स्वच्छ तकनीकें, बेहतर बीज प्रजातियाँ, जल प्रबंधन प्रणालियाँ और आपदा पूर्वानुमान मॉडल बनाने के लिए बड़े पैमाने पर निवेश की जरूरत होती है।
- **अवसंरचना परिवर्तन की कीमत:** कोयला आधारित ऊर्जा से नवीकरणीय स्रोतों की ओर संक्रमण, परिवहन व्यवस्था का विद्युतीकरण, और शहरी योजनाओं का हरित रूपांतरण अत्यधिक पूंजी-गहन प्रक्रियाएँ हैं।

साथ ही, कमजोर समुदायों की सुरक्षा, बीमा योजनाएँ, सामाजिक सुरक्षा जाल और कौशल प्रशिक्षण के लिए भी निरंतर वित्तीय प्रवाह आवश्यक है।

मौजूदा वित्तपोषण से जुड़ी मुख्य समस्याएँ

जलवायु वित्तपोषण की ज़रूरत जितनी बड़ी है, वर्तमान व्यवस्था उतनी ही अपर्याप्त और असंतुलित दिखाई देती है।

1. **पर्याप्त वित्त की कमी :–** जलवायु समाधानों के लिए जितना धन आवश्यक है, उसके मुकाबले वास्तविक प्रवाह काफी कम है। अनेक नवोन्मेषी परियोजनाएँ केवल इसलिए अटक जाती हैं क्योंकि वे शुरुआती चरण में वाणिज्यिक रूप से लाभदायक नहीं दिखतीं, जबकि दीर्घकालिक सामाजिक लाभ बहुत बड़े होते हैं।
2. **विकासशील देशों की सीमित पहुँच :–** विकासशील और सबसे कम विकसित देशों के पास परियोजना-तैयारी, तकनीकी विशेषज्ञता और सह-वित्त (Co-finance) जुटाने की क्षमता कम होने के कारण, अंतरराष्ट्रीय कोषों तक उनकी पहुँच कठिन हो जाती है। कमजोर संस्थागत ढाँचा, जटिल प्रक्रियाएँ और उच्च प्रशासनिक अपेक्षाएँ भी इस चुनौती को और बढ़ा देती हैं।
3. **धन के आवंटन में असंतुलन :–** अक्सर वित्तपोषण बड़े, आकर्षक या राजनीतिक रूप से प्राथमिकता वाली परियोजनाओं की ओर चला जाता है, जबकि जमीनी स्तर पर छोटे, सामुदायिक और स्थानीय अनुकूलन कार्यों को अपेक्षित समर्थन नहीं मिल पाता। कई बार पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी के कारण उपलब्ध धन भी पूरी प्रभावशीलता के साथ उपयोग में नहीं आ पाता।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विकसित देशों की भूमिका

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है, इसलिए इसके

समाधान भी वैश्विक स्तर पर साझा जिम्मेदारी से ही संभव हैं। विकसित देशों ने औद्योगिक क्रांति से अब तक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में बड़ा योगदान दिया है, इसलिए ''साझा परंतु भिन्न दायित्व'' के सिद्धांत के अनुसार उन पर अधिक वित्तीय व तकनीकी योगदान की नैतिक जिम्मेदारी मानी जाती है। विकासशील देशों को स्वच्छ ऊर्जा, जल प्रबंधन, आपदा-रोधी अवसंरचना और कृषि अनुकूलन के लिए न केवल वित्त, बल्कि तकनीक हस्तांतरण और क्षमता निर्माण (Capacity building) के रूप में भी सहयोग की आवश्यकता है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय कोषों की प्रक्रिया को सरल, तीव्र और अधिक न्यायसंगत बनाना भी इस सहयोग को वास्तविक और प्रभावी बना सकता है।

पारदर्शी और कुशल धन-प्रबंधन की आवश्यकता:

जलवायु परिवर्तन के समाधान के लिए सिर्फ धन जुटाना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे सही स्थान और सही समय पर, सही तरीके से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इन्हें निम्नलिखित तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता है:-

- **स्पष्ट मानदंड और प्राथमिकताएँ:** किन क्षेत्रों, समुदायों और परियोजनाओं को पहले समर्थन दिया जाए, इसके लिए पारदर्शी मानदंड और वैज्ञानिक आकलन आवश्यक हैं।
- **निगरानी और मूल्यांकन:** हरित परियोजनाओं के परिणामों की नियमित समीक्षा, सामाजिक-पर्यावरणीय प्रभाव का मापन और जनता के प्रति जवाबदेही, वित्तीय संसाधनों के बेहतर उपयोग को सुनिश्चित कर सकते हैं।
- ई-गवर्नेंस, डिजिटल भुगतान और सार्वजनिक डैशबोर्ड जैसे साधन पारदर्शिता बढ़ाने और भ्रष्टाचार की गुंजाइश घटाने में मददगार हो सकते हैं।

निजी क्षेत्र की भूमिका और हरित निवेश

जलवायु वित्तपोषण की आवश्यकता इतनी विशाल है कि केवल सरकारी बजट से इसकी पूर्ति संभव नहीं, इसलिए निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। इन्हें निम्नलिखित तरीकों से समझा जा सकता है:-

- हरित बॉन्ड और सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन जैसे वित्तीय औज़ार निवेशकों को पर्यावरणीय लक्ष्यों से जोड़े हुए प्रतिफल का विकल्प देते हैं।
- कंपनियाँ यदि अपने व्यवसाय मॉडल में ऊर्जा दक्षता, नवीकरणीय ऊर्जा, कचरा प्रबंधन और कार्बन-घटाने वाले नवाचारों को शामिल करें, तो यह न केवल पर्यावरण के लिए, बल्कि दीर्घकालिक लाभप्रदता और ब्रांड वैल्यू के लिए भी सकारात्मक सिद्ध हो सकता है।
- सरकारें टॅक्स प्रोत्साहन, जोखिम-साझेदारी तंत्र और नीति स्थिरता के माध्यम से निजी निवेशकों के विश्वास को मजबूत कर सकती हैं।

सामाजिक जागरूकता और सामुदायिक साझेदारी

जलवायु परिवर्तन से जूझने की असली ताकत केवल बड़े फंड और नीतियों में नहीं, बल्कि सामान्य नागरिकों और समुदायों की भागीदारी में छिपी होती है। इसके लिए निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं:-

- **शिक्षा और जन-जागरूकता:** स्कूलों, कॉलेजों, मीडिया और सामाजिक अभियानों के माध्यम से लोगों को यह समझाना आवश्यक है कि उनके छोटे-छोटे निर्णय - जैसे ऊर्जा की बचत, पर्यावरण-अनुकूल उपभोग, जल संरक्षण और स्थानीय जैव-विविधता की रक्षा - कितने बड़े स्तर पर फर्क ला सकते हैं।
- **बहु-पक्षीय सहयोग:** सरकार, गैर-सरकारी संगठनों, स्थानीय निकायों और निजी कंपनियों के बीच साझेदारी से ऐसे कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं, जो स्थानीय जरूरतों के अनुरूप समाधान विकसित करें।
- जनसमर्थन को संगठित कर, स्वयं-सहायता समूहों, किसान संगठनों और शहरी नागरिक मंचों की भूमिका को मजबूत बनाया जा सकता है, जिससे जलवायु वित्तपोषण के लाभ सीधे समुदायों तक पहुँचें।

भविष्य के लिए रणनीतिक कदम

जलवायु परिवर्तन से मुकाबले हेतु वित्तपोषण को ''खर्च'' न मानकर ''निवेश'' के रूप में देखना समय की मांग है। इन्हें

निम्नलिखित तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता है:-

- **दीर्घकालिक योजनाएँ:** बजट और योजनाओं में 5-10 साल के बजाय 20-30 साल की समय-सीमा को ध्यान में रखकर हरित अवसंरचना, ऊर्जा संक्रमण और आपदा-रोधी प्रणालियों में निवेश की योजना बनानी होगी।
- **समावेशी दृष्टिकोण:** जलवायु वित्तपोषण की नीतियों में महिलाओं, आदिवासी समुदायों, युवाओं और कमजोर वर्गों को सक्रिय साझेदार के रूप में मान्यता देना, न केवल न्यायपूर्ण है, बल्कि समाधान को अधिक व्यावहारिक और टिकाऊ भी बनाता है।
- **तकनीक, नीति, समाज और वित्त** – इन चारों स्तंभों के समन्वय से ही जलवायु परिवर्तन के सामने एक सुदृढ़ और टिकाऊ विकास मॉडल खड़ा किया जा सकता है।

निष्कर्ष : समृद्धि की ओर हरित पथ

जलवायु परिवर्तन ने मानव सभ्यता को एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया है जहाँ **''जैसे-तैसे विकास''** की सोच छोड़कर **''सतत और समावेशी विकास''** की दिशा में बढ़ना ही एकमात्र व्यावहारिक विकल्प है। इस परिवर्तन की धुरी जलवायु वित्तपोषण है, जो संकट को अवसर और जोखिम को नवाचार में बदलने की क्षमता रखता है।

यदि अंतरराष्ट्रीय सहयोग, राष्ट्रीय नीतियाँ, निजी निवेश, और सामुदायिक जागरूकता - इन सबके बीच संतुलित साझेदारी स्थापित की जा सके, तो जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ मानव समाज को परास्त नहीं, बल्कि अधिक सजग, जिम्मेदार और समृद्ध बना सकती हैं। यही वह दिशा है, जिसमें सही, न्यायपूर्ण और पारदर्शी वित्तपोषण हमें एक सुरक्षित, स्थायी और स्वस्थ भविष्य की ओर ले जा सकता है।

चम्पई मोहन मंगलम मुर्मू
वरिष्ठ प्रबंधक, अनुपालन विभाग
मुंबई दक्षिण अंचल

'मन की व्यथा'

मन में मेरे है क्या मैं बताऊँ कैसे ?
दिल परेशान है कितना यें जताऊँ कैसे ?
मेरा चेहरा मेरे जख्म को बयाँ नहीं करता !
चेहरे की झूठी खुशी को अब हटाऊं कैसे ?
मन में मेरे हैं क्या मैं बताऊँ कैसे ?

ख़्वाहिशों का अल्हड़पन अब रुलाता है मुझको,
सुनूं याँ ना सुनूं पर सताता है मुझको !
टूटे हुए सपनों से रूबरू करता है मुझको,
बंदिशों के झुरमुटों में वो सुलाता है मुझको !
कुछ अनकही राज़ का मैं इकलौता गवाह हूँ !
मयखाने के महफिलों का उड़ता हुआ अफवाह हूँ !!
समुन्दर सी गहराई मैं अब लाऊं कैसे ?
मन में मेरे है क्या मैं बताऊँ कैसे ?

बेलगाम घोड़े की मैं चाल हो गया हूँ,
अपने ही सपनों का मैं काल हो गया हूँ !
उफनती हुई नदियों का मैं ढाल हो गया हूँ,
सूखे हुए पेड़ का मैं खाल हो गया हूँ !
चुभते हुए किस्सों का इकलौता किरदार हूँ !
इस अंधेरे दुनिया का इकलौता हकदार हूँ !!
खुद को जिसमें लिख सकूं वो संवाद मैं लाऊं कैसे ?
मन में मेरे है क्या मैं बताऊँ कैसे ?

चीखते हुए राग की दबी आवाज हूँ मैं,
भीनी-भीनी संगीत का तन्हा सा साज हूँ मैं !
संवरे हुए जीवन का बिखरा हुआ आज हूँ मैं,
दिल की बेचैनियों का दहकता नाज हूँ मैं !
हवा के झोंकों से लड़ता परिंदा हूँ !
मतलब की इस दुनिया में अभी थोड़ा ज़िंदा हूँ !!
खुद से जिससे लड़ सकूं वो व्यवहार मैं लाऊं कैसे ?
मन में मेरे है क्या मैं बताऊँ कैसे ?

शिवम पांडे
अधिकारी
वाराणसी अंचल

राष्ट्रीय मास्टर्स तैराकी चैंपियनशिप में गौरवपूर्ण उपलब्धि

हमें अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है कि तेलंगाना अंचल, गाचीबावली शाखा की मुख्य प्रबंधक सुश्री अक्षया जानजाद ने हैदराबाद के गाचीबावली स्टेडियम में आयोजित 21वीं राष्ट्रीय मास्टर्स तैराकी चैम्पियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है।

भारत में आयोजित होने वाली सबसे कठिन और प्रतिस्पर्धात्मक मास्टर्स तैराकी प्रतियोगिताओं में से एक में प्रतिभागिता करते हुए तथा 2026 विश्व मास्टर्स एक्वाटिक चैम्पियनशिप के लिए एक महत्वपूर्ण क्वालिफ़ायर के रूप में सुश्री अक्षया जानजाद ने अपने अद्वितीय कौशल, अनुशासन और दृढ़ संकल्प का परिचय देते हुए कुल पाँच पदक अपने नाम किए।

- स्वर्ण पदक – 4 x 50 मीटर मेडले रिले
- रजत पदक – 50 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक
- कांस्य पदक – 100 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक
- कांस्य पदक – 50 मीटर बैकस्ट्रोक
- कांस्य पदक – 4 x 50 मीटर फ्रीस्टाइल रिले

सुश्री अक्षया जानजाद की यह उपलब्धि न केवल उनकी व्यक्तिगत उत्कृष्टता का प्रमाण है, बल्कि यह दर्शाती है कि निरंतर अभ्यास, आत्म-अनुशासन और समय प्रबंधन के माध्यम से पेशेवर दायित्वों के साथ-साथ खेल के क्षेत्र में भी सर्वोच्च स्तर की सफलता प्राप्त की जा सकती है। उनकी यह सफलता सहकर्मियों, युवा खिलाड़ियों एवं संपूर्ण बैंक परिवार के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

हम सुश्री अक्षया जानजाद को इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हैं और भविष्य की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए उन्हें उज्ज्वल सफलता की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

संघर्ष से शिखर तक: विश्व विजेता भारतीय महिलाएँ

नवंबर 2025 की वह रात भारतीय खेल इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गई, जब हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में 'वुमेन इन ब्लू' ने अपना पहला आईसीसी महिला वनडे विश्व कप खिताब जीतकर करोड़ों भारतीयों के सपने को साकार किया। यह जीत केवल एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि संघर्ष, साहस और अटूट संकल्प की एक महागाथा है, जिसे रचने वाली प्रत्येक खिलाड़ी ने जीवन की अनगिनत कठिनाइयों को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से पार किया।

ये महिलाएँ केवल क्रिकेट के मैदान की ही नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़िवादी सोच से भी लड़कर यहाँ तक पहुँची हैं। एक ऐसे देश में जहाँ आज भी लड़कियों के लिए खेल को करियर के रूप में चुनना एक चुनौती है, इन खिलाड़ियों ने अपने सपनों को पंख दिए।

कालचक्र की चाल बदल दी, जब माँगा रण-सज्जा का दान।
अग्निपरीक्षा से होकर गुज़री, तब जाकर मिला विजय का मान!

इस विजय की नींव रखने वालों का अमूल्य योगदान

यह ऐतिहासिक सफलता एक दिन में हासिल नहीं हुई। इसकी नींव उन पूर्व खिलाड़ियों ने रखी, जिन्होंने दशकों तक विपरीत परिस्थितियों और नाममात्र के संसाधनों में भी भारतीय महिला क्रिकेट की मशाल जलाए रखी। शांता रंगास्वामी, डायना एडुल्जी जैसी शुरुआती पीढ़ी की खिलाड़ियों से लेकर, अंजुम चोपड़ा, मिताली राज और झूलन गोस्वामी जैसी दिग्गजों ने भी संघर्ष किया। उन्हें पुरुष टीम की तुलना में कम वेतन, सीमित मीडिया कवरेज और बुनियादी ढाँचे की कमी झेलनी पड़ी।

मिताली राज, जिन्होंने विश्व क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाए, और झूलन गोस्वामी, जिन्होंने सर्वाधिक विकेट लिए, ने महिला क्रिकेट को एक नई पहचान दी। उनकी दृढ़ता ने ही मौजूदा पीढ़ी के लिए सम्मान और सुविधाओं के द्वार खोले। विश्व कप जीतने वाली यह टीम उन सभी पूर्व खिलाड़ियों के संघर्ष और बलिदान को समर्पित है, जिन्होंने इस सपने को साकार करने की हिम्मत दी।

हर खिलाड़ी की अपनी कहानी और उनका समर्पण

टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर के सफर को ही लें। पंजाब के एक छोटे से गाँव से निकलकर, उन्होंने क्रिकेट खेलने के लिए शुरुआती दिनों में लड़कों के साथ अभ्यास किया। महिला क्रिकेट को उतनी पहचान और सुविधाएँ न मिलने के बावजूद, उनके जुनून ने उन्हें भारतीय टीम का नेतृत्व करने वाली पहली महिला विश्व कप विजेता कप्तान बना दिया।

अनुभवी बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्स की कहानी विशेष रूप से प्रेरणादायक है। मुंबई के एक साधारण परिवार से आने वाली जेमिमा को अपने करियर के शुरुआती चरण में क्रिकेट और अपनी अकादमिक पढ़ाई के बीच संतुलन बनाने के लिए अथक परिश्रम करना पड़ा। उनके पिता ने उन्हें क्रिकेट की बारीकियां सिखाईं, लेकिन वित्तीय चुनौतियों के कारण उन्हें कई बार सीमित संसाधनों में ही अपनी ट्रेनिंग करनी पड़ी।

चोटों और मानसिक मज़बूती पर विजय

विश्व कप के दौरान कुछ खिलाड़ियों को गहन चोटों के कारण संघर्ष करना पड़ा, जिसने टीम की चुनौतियों को और बढ़ा दिया। चोटिल होने के बावजूद, इन खिलाड़ियों ने मैदान पर उतरने और टीम के लिए प्रदर्शन करने का अभूतपूर्व साहस दिखाया। उन्होंने अपनी शारीरिक पीड़ा को दरकिनार करते हुए, देश के लिए खेलने के अपने सपने को सर्वोपरि रखा। बल्लेबाजी की रीढ़ प्रतिका रावल का सफर भी मुश्किलों से भरा रहा। एक छोटे से गाँव से आने वाली प्रतिका ने अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहयोग देने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने इस विश्व कप मे बुरी तरह घायल होने के पहले शानदार प्रदर्शन किया था जिसकी भूरी भूरी प्रशंसा माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी की है ।

रक्त बहे, पर रण न छोड़ा, हर प्रहार को हँस कर झेला।

चोट जिस्म पर, हौसला मन में, फिर भी अखाड़ा डटकर खेला!

यह दिखाता है कि इस टीम के हर सदस्य में खेल के प्रति कितना गहरा समर्पण है। उन्होंने केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक चुनौतियों को भी पार किया, क्योंकि बड़े टूर्नामेंट का दबाव अक्सर प्रदर्शन को प्रभावित करता है। उन्होंने हर बाधा को अपनी ताकत बनाया।

विजय का संदेश

विश्व कप की यह ऐतिहासिक जीत भारतीय महिला क्रिकेट के लिए आत्म-संदेह से आत्मविश्वास की ओर एक बड़ी छलांग है। यह उन लाखों भारतीय लड़कियों के लिए एक प्रेरणा है जो अपने सपनों को पूरा करने की हिम्मत रखती हैं। हरमनप्रीत, स्मृति, जेमिमा, राजेश्वरी, शफाली वर्मा आदि और उनकी टीम ने यह सिद्ध कर दिया कि अगर जुनून सच्चा हो, तो कोई भी कठिनाई, चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो या शारीरिक, आपके और आपके लक्ष्य के बीच नहीं आ सकती है।

यह जीत महिला सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली प्रतीक है। उनके इस सफर को एक प्रेरणादायक अंग्रेजी उद्धरण बखूबी बयां करता है:

"The moment you give up, is the moment you let someone else win. Never give up."

यह सफर कठिनाइयों से भरा था, लेकिन अंत में, उनकी मेहनत और बलिदान ने उन्हें शिखर पर पहुँचाया और उन्होंने इतिहास रच दिया।

नीले आसमान सी उड़ानें, सपनों को सच करती गईं,
हर गेंद पर हिम्मत की धार, मुश्किलों से लड़ती गईं।
वो पसीना भी ताज बना, जब जीत की बूँदें बरसीं,
हिम्मत, जज़्बा, जुनून लिए, हर सीमा रेखा तरसी।
आज तिरंगा और ऊँचा है, उनकी मेहनत के दम पर,
लिख दी नई कहानी फिर से, भारत की हर एक बेटी ने।
ये जीत नहीं– संदेश है,
हम रुकने वाली नहीं।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने जिस अविस्मरणीय और संघर्षपूर्ण जीत को हासिल किया है, वह मात्र एक खेल की सफलता नहीं, बल्कि हर उस भारतीय नारी के जज्बे का प्रतीक है जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपने 'मैदान' पर डटी हुई है। हमारी महिला क्रिकेटर्स की यह जीत हमें याद दिलाती है कि सफलता कभी आसानी से नहीं मिलती। जब उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी, आखिरी ओवर तक संघर्ष किया और दबाव में भी बेहतरीन प्रदर्शन किया–तो उन्होंने हर उस महिला को प्रेरित किया जो सुबह घर का काम निपटाकर समय पर ऑफिस, बैंक या किसी कार्यस्थल पर पहुँचती है।

सोचिए, एक क्रिकेट मैच में जैसे गेंदबाज़ी, क्षेत्ररक्षण और बल्लेबाज़ी की बहुमुखी भूमिकाएँ होती हैं, ठीक उसी प्रकार हमारी नारियाँ घर और कार्यस्थल की दोहरी जिम्मेदारी बखूबी निभाती हैं। घर पर वे कुशल 'प्रबंधक' हैं, जो समय पर सब कुछ संभालती हैं, और ऑफिस में वे 'पेशेवर खिलाड़ी' हैं, जो हर चुनौती को एक 'टारगेट' मानकर पूरा करती हैं।

महिला टीम की कप्तान की तरह, हर कामकाजी महिला को अपने घर और ऑफिस की 'टीम' को साथ लेकर चलना होता है। कई बार उन्हें भी आलोचनाओं, चुनौतियों और थकावट रूपी 'कठिन परिस्थितियों' का सामना करना पड़ता है। लेकिन, जैसे हमारी खिलाड़ियों ने अपने मजबूत इरादों से विरोधी टीम को परास्त किया, वैसे ही हमारी नारियाँ भी अपनी मेहनत और लगन से हर बाधा को पार कर रही हैं।

यह जीत संदेश देती है: हार मत मानो, डटी रहो, क्योंकि तुम्हारा संघर्ष ही तुम्हारी सबसे बड़ी शक्ति है। चाहे आप ऑफिस की महत्वपूर्ण मीटिंग में हों या घर की दैनिक जिम्मेदारियों को संभाल रही हों, आप हर दिन अपनी एक नई जीत दर्ज कर रही हैं। अपनी इस शक्ति को पहचानो, और हर क्षेत्र में, हर दिन, भारत की इस जीत की तरह चमको और आगे बढ़ो!

डॉ. पल्लवी कुमारी
आंचलिक प्रबंधक
गया अंचल

जब लगे ''मैं नहीं कर पाऊँगी''

भूमिका

हम सबकी ज़िंदगी में कभी न कभी ऐसा पल आता है जब मन अचानक धीमा पड़ जाता है। सामने खड़ी चुनौती पहाड़ जैसी लगने लगती है, और अंदर से एक छोटी सी आवाज़ उठती है: मैं नहीं कर पाऊँगी। सुनने में यह आवाज़ छोटी होती है, लेकिन असर बड़ा करती है। यह हमारे कदम रोक देती है, हमारी रफ़्तार धीमी कर देती है, और कभी-कभी तो हमें अपने ही सपनों से दूर ले जाती है।

लेकिन सच यह है कि यह आवाज़ स्थायी नहीं होती। यह बस उतनी ही सच्ची होती है जितना हम इसे सच मान लेते हैं। यह आवाज़ हमारी कमजोरी से कम और हमारी असुरक्षा से ज्यादा बनती है। मगर कहानी यहीं खत्म नहीं होती। जो लोग जीतते हैं, वे इस आवाज़ को सुनते ज़रूर हैं लेकिन इसका फैसला खुद नहीं बनने देते।

यह लेख उसी आवाज़ को समझने, उस पर मुस्कुराने और उसे मात देने की कला के बारे में है। थोड़ी प्रेरणा, थोड़ी हंसी और ढेर सारा हौसला। तैयार हो जाइए, क्योंकि यह सफ़र आपको उस जगह ले जाएगा जहां मैं नहीं कर पाऊँगी की जगह ''मैं कर के दिखाऊँगी'' गूंज उठेगा।

पहला पड़ाव: यह आवाज़ आती ही क्यों है

हम इंसान हैं, मशीन नहीं। भावनाएं हमारा ईंधन भी हैं और बाधा भी। जब कोई बड़ा काम सामने आता है, जिम्मेदारी होती है या नया रास्ता चुनना पड़ता है, तो डर उठना स्वाभाविक है। डर कई रूपों में आता है - जैसे, 'गलती हो जाएगी', 'लोग क्या कहेंगे', 'मुझसे नहीं होगा' और 'मैंने पहले ऐसा नहीं किया'।

खासकर लड़कियों के मन में कई बार बचपन से ही यह लाइन घोंट दी जाती है: ''ये मत करो'', ''ये लड़कियों के बस की बात नहीं'', ''इतनी बड़ी बात? रहने दो।'' फिर जब सामने कोई बड़ा काम आता है, दिमाग वही पुरानी रिकॉर्डिंग बजा देता है।

लेकिन ज़रा सोचिए, जब हम साइकिल सीख रहे थे, तब गिरने का डर भी था। फिर भी सीखा। आज भरोसे से चलाते हैं। क्यों? क्योंकि हमने एक बार उस डर को धक्का दिया था। और हिम्मत भी इसी धक्के से बढ़ती है। इसलिए यह डर आना कोई गड़बड़ी नहीं। असली बात है कि इसके बावजूद आगे कैसे बढ़ा जाए।

दूसरा पड़ाव: खुद से बात करने का तरीका बदलें

हम अपने सबसे बड़े आलोचक हैं। हम ही खुद से सबसे ज्यादा लड़ते हैं। पर अच्छी बात यह है कि हम अपने सबसे अच्छे दोस्त भी बन सकते हैं - बस फर्क इस बात का है कि हम खुद से कैसे बात करते हैं।

जब मन बोले ''मैं नहीं कर पाऊँगी'', तो उससे पूछिए: ''क्यों नहीं?'', ''क्या सच में नहीं कर पाऊँगी या बस डर लगा है?'', ''अगर थोड़ा थोड़ा करूं तो?'', ''पहले कब मैंने कुछ नया किया था और सफल रही थी?''।

मन जवाब देगा। ज्यादातर बार उसका जवाब होगा: ''हाँ, डर बस ऊपर-ऊपर है। तुम कर सकती हो।'' खुद से बात करना कोई फालतू चीज़ नहीं। यह हमारे दिमाग का स्टियरिंग है। इसे सही दिशा में मोड़ना जरूरी है।

तीसरा पड़ाव: छोटे कदम, बड़ी जीत

किसी भी बड़े काम को एक साथ करने की जरूरत नहीं। पर्वत चढ़ना कठिन है, लेकिन एक-एक कदम आसान। जब भी कुछ असंभव लगे, उसे टुकड़ों में बाँटें। मान लीजिए आपको 100 पेज लिखने की तैयारी करनी है। 100 देखकर डर लगेगा। पर 5 पेज प्रतिदिन? बिल्कुल संभव।

कभी-कभी हमारी घबराहट काम के आकार की वजह से नहीं, बल्कि काम के दिखावे की वजह से होती है। जैसे किसी

शादी में 200 मेहमानों की लिस्ट बनानी है। सुनकर दिमाग सुन्न। लेकिन जब बैठकर नाम लिखने लगते हैं तो 50 मिनट में काम पूरा। हम खुद ही अपने डर को बढ़ा-चढ़ा कर देखते हैं। छोटे कदमों से यह डर हवा की तरह उड़ जाता है।

चौथा पड़ाव: अपनी पुरानी जीत याद रखें

हर इंसान के जीवन में कुछ छोटे-बड़े काम होते हैं जो उसने मुश्किलों के बावजूद किए। उन्हें याद कीजिए। वह पल याद कीजिए जब आपको लगा था कि यह नहीं होगा, पर हुआ। उदाहरण के लिए: पहली बार स्टेज पर बोलना, पहली जॉब का इंटरव्यू, पहली बार अकेले यात्रा, पहली बार किसी बड़ी समस्या को खुद सुलझाना आदि।

यह यादें आपकी हिम्मत की गवाही हैं। इन्हें दोहराएं। दिमाग खुद कहेगा: तुमने पहले भी कर दिखाया है। इस बार भी कर लेगी।

पाँचवाँ पड़ाव: असफलता को दुश्मन नहीं, दोस्त समझें

असफलता डरावनी लगती है, लेकिन सच में वह सीख का खजाना है। दुनिया के हर सफल इंसान की जेब में कुछ असफलताएं जरूर होती हैं। कोई भी व्यक्ति तुरंत महान नहीं बनता। पहले ठोकर खाता है, फिर संभलता है, फिर तेज़ चलता है, फिर जीतता है।

अगर आज आप असफल हुई हैं, तो इसका मतलब केवल यह है कि आप कोशिश कर रही हैं। जो कोशिश करता है, वही आगे बढ़ता है। असफलता वह पगडंडी है जो सफलता तक जाने वाली सड़क से जुड़ती है। अगर यह न हो तो सफलता की कीमत भी समझ नहीं आती।

छठा पड़ाव: दूसरों से सीखें, तुलना न करें

तुलना का खेल सबसे खतरनाक है। इसमें कोई नहीं जीतता। लोगों से सीखना अच्छी बात है, लेकिन उनके जैसे बनने की कोशिश करना ज़रूरी नहीं। हर किसी की यात्रा अलग होती है। किसी का रास्ता छोटा, किसी का लंबा। किसी को चीजें जल्दी मिलता है, किसी को देर से।

जो लोग आज चमकते दिखते हैं, उन्होंने भी अपनी जिंदगी के अँधेरे हिस्से देखे हैं। हम अक्सर उनकी सफलता देखते हैं, संघर्ष नहीं। इसलिए खुद की तुलना दूसरों से मत कीजिए। अपने कल से तुलना कीजिए, अपने कल को बेहतर बनाइए।

सातवाँ पड़ाव: हंसी का थोड़ा तड़का

मज़ाक की ताकत कम मत समझिए। यह कई बार डर को भगा देता है। जब मन बोले मैं नहीं कर पाऊँगी, तो उसे हल्का-सा ताना मार दीजिए: ''अरे, तू फिर आ गया? चाय पीकर आना, आज मैं तेरी नहीं सुनने वाली।'', ''डर महाराज, जरा साइड हटो। मुझे काम करना है।'', ''अगर मैं नहीं कर पाऊँगी, तो कौन करेगा? तुम करोगे? नहीं ना? तो चुपचाप बैठो।''

मन मुस्कुराएगा और काम आसान लगेगा। हंसी तनाव को हल्का करती है, और जब तनाव कम होता है तो रास्ते साफ़ दिखते हैं।

आठवाँ पड़ाव: लोगों से बात करें

कई बार मन का डर हवा हो जाता है जब उसे किसी से बाँटा जाता है। किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करें। वह आपको नई दृष्टि देगा। कई बार हमारी समस्या उतनी बड़ी नहीं होती, जितनी वह हमारे दिमाग में दिखती है।

किसी भरोसेमंद व्यक्ति से कहिए, ''मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं यह नहीं कर पाऊँगी।''

अक्सर जवाब कुछ ऐसा आता है, ''क्यों नहीं कर पाओगी? तुम तो कर सकती हो।''

और यह सुनकर आपके भीतर का हौसला वापस लौट आता है।

नौवाँ पड़ाव: अभ्यास से डर पिघलता है

जो काम बार-बार किया जाए, वह आसान हो जाता है। जो कठिन लगता है, वही अभ्यास से सरल हो जाता है। डर खुद ही भाग जाएगा। डर की एक आदत है: वह अभ्यास से घुल जाता है। आप तैरना सीखें, गाना सीखें, बोलना सीखें, लिखना सीखें, कुछ भी सीखें। एक चीज समान होती है; जितना अभ्यास, उतना आत्मविश्वास।

दसवाँ पड़ाव: खुद पर भरोसा रखना सीखें

विश्वास कोई जन्मजात गुण नहीं। यह बनाया जाता है धीरे-धीरे, अनुभव से, मेहनत से। जब मन कहे ''मैं नहीं कर

पाऊँगी'', तो खुद से एक बात कहें: ''मैं कोशिश करूँगी, और यही काफी है।''

कोशिश करने वाला कभी खाली हाथ नहीं लौटता। कोशिश दरवाज़े खोलती है, रास्ते बनाती है।

खुद पर भरोसा रखने का मतलब यह नहीं कि आप सब कुछ जानती हैं। इसका मतलब है कि आप सीख सकती हैं, सुधर सकती हैं, और आगे बढ़ सकती हैं।

ग्यारहवाँ पड़ाव: आपका सपना आपकी ताकत है

आपके सपने ही आपकी असली ऊर्जा हैं। जब कोई सपना मन में हो, तो उसे पकड़कर रखिए। सपने इंसान को आगे बढ़ाते हैं। वे हमें बताते हैं कि हम किस दिशा में चल रहे हैं और क्यों। जब ''मैं नहीं कर पाऊँगी'' की आवाज़ आए, तो अपना सपना याद कीजिए। सोचिए, अगर आपने हार मान ली तो आपका सपना किसे मिलेगा? वह तो आपका ही है। फिर उसे किसी डर की वजह से क्यों छोड़ें?

बारहवाँ पड़ाव: अपना माहौल बदलें

माहौल बहुत मायने रखता है। अगर आप ऐसे लोगों से घिरी हैं जो हमेशा नकारात्मक बात करते हैं, तो आपका मन भी उसी दिशा में मुड़ने लगता है। इसलिए अपने आसपास ऐसे लोग रखें जो आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। साथ ही, अपने कार्यस्थल को साफ-सुथरा रखें। एक व्यवस्थित माहौल मन को भी व्यवस्थित बनाता है।

तेरहवाँ पड़ाव: अपनी जीत का जश्न मनाना सीखें

हम अक्सर छोटी-छोटी जीतों को अनदेखा कर देते हैं, जबकि वे ही हमें आगे बढ़ाती हैं। हर छोटे कदम का जश्न मनाइए। यह आपके मन को और मेहनत करने के लिए प्रेरित करेगा। चाहे आज आपने सिर्फ दस पेज पढ़े हों, या सिर्फ पाँच लाइनें लिखी हों, या सिर्फ एक छोटी-सी तैयारी की हो, यह भी उपलब्धि है।

चौदहवाँ पड़ाव: डर को पहचानें, उससे भागें नहीं

कभी-कभी डर हमें रोकने नहीं, बल्कि सावधान करने आता है। उसे पहचानना जरूरी है। अगर डर कहता है ''तैयारी पूरी नहीं है'', तो तैयारी कीजिए। अगर डर कहता है ''जोखिम ज्यादा है'', तो सोच-समझ कर कदम उठाइए। लेकिन डर को यह मत मानने दीजिए कि आप नहीं कर सकतीं। डर को एक सलाहकार समझिए, मालिक नहीं।

पंद्रहवाँ पड़ाव: आप अपनी कहानी की नायिका हैं

आपकी जिंदगी आपकी अपनी कहानी है। इसमें मुख्य किरदार आप ही हैं। हर फिल्म में नायिका लड़खड़ाती है, गिरती है, लेकिन अंत में जीतती है। क्यों? क्योंकि वह हार नहीं मानती। आप भी अपनी कहानी की नायिका हैं। चुनौती चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, आपकी हिम्मत उससे बड़ी है।

निष्कर्ष: ''मैं नहीं कर पाऊँगी'' से ''मैं करके दिखाऊँगी'' तक

डर होना सामान्य है; रुक जाना सामान्य नहीं। जितनी बार यह आवाज़ आए, उतनी बार उससे एक कदम आगे बढ़ें। जीवन आसान इसलिए होता है कि हम डर के बावजूद आगे बढ़ते हैं। यही असली ताकत है। जब भी मन कहे ''मैं नहीं कर पाऊँगी'', तो मुस्कुराकर जवाब दें: ''देखते रहना, मैं करके दिखाऊँगी।''

और बस, आपका सफ़र शुरू। आगे रास्ते बनते जाएँगे, हौसला बढ़ता जाएगा। और एक दिन वही डर आपको सलाम करेगा।

आप जीतेंगी। हमेशा जीतेंगी।

नीतू सिंह
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
प्रबंधन विकास संस्थान
सीबीडी बेलापुर

नेपाल यात्रा: संस्कृति, शांति और सौंदर्य की खोज में

सफर सिर्फ स्थान बदलने का नाम नहीं होता, यह एक अनुभव होता है; अपने भीतर उतरने का, और बाहरी दुनिया को नई आँखों से देखने का। अप्रैल की शुरुआत में, मैंने अपने माता-पिता, पत्नी और 11 महीने की बेटी के साथ एक ऐसे ही यादगार सफर पर निकलने का निश्चय किया। नेपाल, एक ऐसा पड़ोसी देश जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता है। नेपाल और भारत का संबंध केवल पड़ोसी देशों का नहीं, बल्कि आत्मिक और सांस्कृतिक जुड़ाव का है। ये दोनों राष्ट्र हिमालय की छाया में पले दो सहोदर जैसे हैं, जिनके बीच खुली सीमाएँ, साझा इतिहास, धार्मिक परंपराएँ और पारिवारिक संबंधों की अनगिनत परतें हैं।

धार्मिक जुड़ाव: पशुपतिनाथ (काठमांडू) से लेकर जानकी मंदिर (जनकपुर) तक, नेपाल में ऐसे अनेक स्थल हैं जो भारत की धार्मिक चेतना से सीधे जुड़े हैं। भगवान राम और माता सीता की कथा दोनों देशों को एक गहरे सांस्कृतिक सूत्र में पिरोती है।

सांस्कृतिक समानता: भाषा, पोशाक, खानपान, त्यौहार सबमें आश्चर्यजनक समानता है। भारत के उत्तर बिहार और नेपाल के तराई क्षेत्र की संस्कृति में कोई भेद नहीं दिखाई देता।

राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध: भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक 1950 की शांति और मैत्री संधि के अंतर्गत नागरिकों को एक-दूसरे के देशों में आवागमन, कार्य और व्यापार की स्वतंत्रता प्राप्त है।

व्यापार और आपूर्ति: नेपाल को आवश्यक वस्तुओं की एक बड़ी मात्रा भारत से आपूर्ति होती है। भारत, नेपाल का प्रमुख व्यापारिक साझेदार और सहयोगी है; चाहे बात सड़क निर्माण की हो, स्वास्थ्य सेवा की या जल विद्युत परियोजनाओं की।

इन सबके बावजूद, जैसे हर संबंध में समय-समय पर मतभेद आते हैं, भारत-नेपाल संबंधों में भी कूटनीतिक जटिलताएं रही हैं, लेकिन इनका समाधान सदैव आपसी संवाद और विश्वास से किया गया है।

पहला पड़ाव: हावड़ा से रक्सौल तक – सीमा की ओर

हमारी यात्रा हावड़ा से प्रारंभ हुई, जहाँ से हमने ट्रेन द्वारा रक्सौल की ओर रुख किया। भारत और नेपाल की सीमा पर बसा एक प्रमुख प्रवेश द्वार। जैसे ही रक्सौल पहुँचे, वहाँ से हमने एक छोटी कार किराए पर ली और नेपाल के राजधानी शहर काठमांडू की ओर प्रस्थान किया।

करीब 6-7 घंटे की यात्रा, जिसमें रास्ते में बीरगंज जैसे शहर भी पड़े, हमें हरे-भरे पहाड़ों, घुमावदार रास्तों और नेपाली जीवन की झलकियों से भरपूर अनुभव मिला।

काठमांडू: देवताओं का नगर

काठमांडू, एक ऐसा नगर जहाँ अतीत साँस लेता है और वर्तमान आध्यात्मिकता से सराबोर होता है। यहाँ सबसे पहले हमने दर्शन किए विश्व प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर के, जो भगवान शिव का एक प्रमुख ज्योतिर्लिंग है और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल भी है।

यहाँ की गंगा आरती एक अविस्मरणीय अनुभव था।

नेपाली संस्कृति में रचा-बसा आध्यात्मिक संगम, जहाँ मंत्रोच्चार, संगीत और दीपों की रौशनी वातावरण को आस्था से सराबोर कर देती है।

इसके अलावा हमने काठमांडू के अन्य प्रमुख स्थल भी देखे:

• **बौद्धनाथ स्तूप –** विश्व के सबसे बड़े गोल स्तूपों में से एक, जहाँ शांति हर साँस में बसी है।

• **स्वयंभूनाथ (मंकी टेम्पल) –** पहाड़ी पर स्थित यह स्तूप बौद्ध और हिंदू संस्कृति का मिलन स्थल है, जहाँ से शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

• **दरबार स्क्वायर –** नेपाली स्थापत्य और शाही इतिहास का अद्भुत संग्रह।

हालाँकि मुद्रा विनिमय दर भारत के पक्ष में थी (INR 1 = NPR 1.6), लेकिन वहाँ वस्तुएं, विशेषकर खाद्य सामग्री, अपेक्षाकृत महँगी पाईं। शायद इसका मुख्य कारण नेपाल की आयात पर निर्भरता है।

मनोकामना देवी और मुग्लिन होते हुए पोखरा की ओर

काठमांडू से दो दिन बाद हम निकले मनोकामना मंदिर की ओर, जो कि इच्छाओं की पूर्ति करने वाली देवी को समर्पित है। यह मंदिर एक पहाड़ी पर स्थित है और वहाँ तक पहुँचने के लिए नेपाल की पहली केबल कार सेवा का उपयोग किया जाता है जो कि एक रोमांचक और श्रद्धा से भरा अनुभव था।

इसके पश्चात हम मुग्लिन होते हुए पहुंचे। पोखरा, हिमालय की गोद में बसा शांत शहर, जो प्रकृति प्रेमियों और साहसिक यात्रियों का स्वर्ग है।

पोखरा: हिमालय का आईना

पोखरा के प्राकृतिक सौंदर्य ने मन मोह लिया। यहाँ हमने देखा:

• **फेवा झील (Phewa Lake) –** नीले जल की यह झील बोटिंग के लिए आदर्श है। बीच में स्थित बराही मंदिर तक नाव से पहुँचना एक दिव्य अनुभव था।

• **पुम्दी कोट (Pumdikot): पोखरा की ऊँचाई पर बसा शिव धाम –**

1. भगवान शिव की विशाल प्रतिमा – पुम्दी कोट का मुख्य आकर्षण है 51 फीट ऊँची भगवान शिव की मूर्ति, जो ध्यान मुद्रा में बैठी है। यह मूर्ति एक ऊँचे प्लेटफॉर्म पर स्थित है, जिससे यह आस-पास की पूरी घाटी और पोखरा शहर पर दृष्टिपात करती प्रतीत होती है। यह स्थान विशेष रूप से सूर्योदय या सूर्यास्त के समय अत्यंत मनोरम लगता है।

2. पुम्दी कोट व्यू पॉइंट – यहाँ से आपको अन्नपूर्णा श्रृंखला, माछापुच्छ्रे (फिशटेल), फेवा झील और पोखरा शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। साफ मौसम में यहाँ से हिमालय की चोटियाँ स्पष्ट नजर आती हैं।

3. शांत वातावरण

यह स्थान शहर की भीड़भाड़ से दूर है और ध्यान व ध्यान-साधना के लिए अत्यंत उपयुक्त है। यहाँ स्थानीय लोग

भी अपनी आस्था और शांति के लिए नियमित आते हैं।

• **शांति स्तूप (World Peace Pagoda) –** यह बौद्ध स्तूप हिमालय और फेवा झील का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है।

• **देवी की जलधारा (Devi's Fall)** और गुप्तेश्वर गुफा – प्रकृति की अद्भुत रचनाएँ।

• **सरांगकोट –** यहाँ से अन्नपूर्णा श्रृंखला और माछापुच्छ्रे (Fishtail Mountain) का सूर्यबिंब दृश्य देखकर मन मंत्रमुग्ध हो गया।

• **माउंटेन म्यूज़ियम –** जहाँ नेपाल की पर्वतीय संस्कृति और एवरेस्ट फतह की कहानियाँ जीवंत होती हैं।

जनकपुर: मिथिला की आत्मा

पोखरा से हम निकले अपने अंतिम पड़ाव जनकपुर की ओर जो कि माता सीता की जन्मभूमि के नाम से प्रसिद्ध है। लगभग 8–9 घंटे की यात्रा के बाद जब हम वहाँ पहुँचे, तो जैसे रामायण काल सजीव हो उठा। वहाँ के कुछ विशेष आकर्षण थे –

• **जानकी मंदिर –** एक भव्य और मिथिला स्थापत्य शैली में बना यह मंदिर माता सीता को समर्पित है।

• **विवाह मंडप –** जहाँ श्रीराम और जानकी का विवाह संपन्न हुआ माना जाता है।

• **गंगा सागर और धनुष सागर –** पवित्र सरोवर जहाँ शांति और आस्था एक साथ निवास करते हैं।

• **मिथिला म्यूज़ियम –** स्थानीय कला, संस्कृति और पेंटिंग्स का सुंदर संग्रह।

यात्रा का समापन

16 अप्रैल को जनकपुर दर्शन के बाद हम भारत की ओर लौट चले, और 17 अप्रैल को मुजफ्फरपुर से ट्रेन पकड़कर पुनः हावड़ा वापस आए। यह यात्रा ना केवल एक पारिवारिक छुट्टी थी, बल्कि यह आध्यात्मिक चेतना, सांस्कृतिक आत्म सात और प्राकृतिक सौंदर्य की तलाश का एक गहन अनुभव था।

नेपाल यात्रा हमें यह सिखा गई कि सीमाएँ केवल नक्शों में होती हैं, संस्कृति और आस्था की कोई सीमा नहीं होती। यह यात्रा यादों में नहीं, आत्मा में बस गई है। पशुपतिनाथ की आरती से लेकर फेवा झील की लहरों तक, और जानकी मंदिर की घंटियों से लेकर हिमालय की चुप्पी तक।

यह यात्रा इस बात का साक्षात प्रमाण है कि भारत और नेपाल के संबंध केवल राजनीतिक या आर्थिक नहीं हैं। ये जन–जन के हृदय का संबंध हैं, जो सदियों से अनकहे भावों में जीवित हैं।

आप भी आइए, नेपाल बुला रहा है।

संजय सेन
प्रबंधक (राजभाषा)
हावड़ा आंचलिक कार्यालय

'सिनेमा के पर्दे की ओट से झाँकता साहित्य का नोबेल'

नोबेल पुरस्कार विजेता हंगेरियाई साहित्यकार लाज़्लो क्राज़्नाहोरकाई का रचना-संसार

साल 1889 की सर्दियाँ। इटली के तुरीन शहर की एक अनमनी-सी दोपहर। एक कोचवान का घोड़ा यकायक नगर की मुख्य सड़क के बीचोबीच अड़ जाता है। लाख कोशिशों के बावजूद घोड़ा अपनी जगह से टस-से-मस न हो। कोचवान अपनी हताशा में घोड़े पर अन्धाधुन्ध सोंटे बरसाने लगता है। महान दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे वहाँ से गुज़र रहा होता है। उससे यह दृश्य देखा नही जाता और वह घोड़े की मदद के लिए दौड़ पड़ता है। चाबुक की मार से बचाने के लिए वह अपनी बाहें फैलाकर घोड़े की गर्दन में डाल देता है। वह फूट-फूटकर रोने लगता है और थोड़ी देर बाद गश खाकर गिर पड़ता है...

देखा जाए तो यह घटना एकदम सामान्य-सी लगती है, लेकिन अपने समय के सबसे बड़े प्रज्ञावान व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना साबित होती है। कहते हैं कि नीत्शे इस सामान्य-सी घटना से इतना विचलित हो गया कि फिर कभी चेतस न हो सका। पड़ोसी घर पहुँचा गए थे। नीत्शे लगातार दो दिनों तक बिना कुछ बोले सोफे पर लेटा रहा और फिर उसने अपने 'अंतिम शब्द' कहे: मटर, इच बिन डम (माँ, मैं मूर्ख हूँ)। दीपक बुझ चुका था। यह एक युग का अवसान था।

आज दुनियाभर में उपर्युक्त घटना एक किंवदंती की तरह दुहराई जाती है। घटना के बाद नीत्शे का क्या हुआ सब जानते हैं, लेकिन तुरीन के कोचवान और उस अड़ियल घोड़े का क्या हुआ, इस सवाल में कभी किसी की रुचि नहीं रही।

लगभग एक सदी बाद हंगरी का एक अद्वितीय फिल्मकार, बेला तार इस सवाल से टकराता है और इस प्रक्रिया में दुनिया को अपनी अंतिम रचना देता है-'द ट्यूरीन हॉर्स' (2011)। इस रचना को सँवारने में फ़िल्मकार की मदद करता है, उसका अज़ीज़ दोस्त और हमारे समय का महानतम उपन्यासकार-लाज़्लो क्राज़्नाहोरकाई। क्राज़्नाहोरकाई और बेला तार की यह रचना फिल्मकार और उपन्यासकार के साझा विजन की शानदार परिणति सिद्ध होती है- संगीत के दो घरानों से ताल्लुक रखने वाले दो उस्तादों की सर्वश्रेष्ठ जुगलबंदी की तरह अपूर्व और अनुपम रचना।

इस सिनेमा में हमारी कहानी का वह इक्का अब इटली की संभ्रात गलियों और ढ़लानों को पार कर हंगरी के बर्फीले मैदानी और बीहड़ इलाके में उतर आया है, जहाँ बूढ़ा कोचवान अपनी जवान बेटी और इस बदमिज़ाज घोड़े के साथ प्रकृति की क्रूरता के बीच जीने को अभिशप्त है। इस प्रांतर का ईश्वर मर चुका है और मनुष्यता यहां अपनी अंतिम साँसे गिन रही है। दोनों ने समवेत स्वर में 'अंत' की घोषणा कर दी है।

फिल्म किसी यूरोपीय उपन्यास के अंतहीन और खिंचे हुए वाक्यों की तरह चेतना के पृष्ठ पर पसरती चली जाती है। दर्शक एक विराम-चिह्न भर के लिए व्याकुल हो उठता है। और तार हैं कि निर्ममतापूर्वक, क्राज़्नाहोरकाई की लिखी कुल छः दिनों की कहानी मात्र तीस (30) शॉट्स में, बिना सांस लिए कह जाते हैं- तीस सुदीर्घ शॉट्स, जिनकी पृष्ठभूमि में नीत्शे की छवि झिलमिलाती है। समूची दृश्यावली इतनी सर्द है कि रूह को जकड़ लेती है। क्रिया-व्यापारों अंतहीन पुनरावृत्ति और कैमरे एकतानता चेतना पर छा जाती है। साहित्य का डिस्टोपिया सिनेमा के श्वेत-श्याम पर्दे पर और भी भयावह हो उठता है।

प्रख्यात हंगेरियन कथाकार लाज़्लो क्राज़्नाहोरकाई

(Krasznahorkai Laszlo) के अबतक सात उपन्यास और समवेत रूप से लगभग इतनी ही उपन्यासिकाएँ और कथा-संग्रह प्रकाशित हैं। उनके रचनात्मक अवदान का एक पहलू अगर उनके उपन्यास हैं, तो दूसरा है- सिनेमा और ओपेरा। सिनेमा को उनके अवदान पर अपेक्षाकृत कम चर्चा हुई है। उनके 'सैटन टैंगो' और 'द मेलंकली ऑफ रेज़िस्टेंस' नामक उपन्यासों पर बेला तार पहले ही फिल्म बना चुके थे- क्रमशः 'सैटन टैंगो- (1994) और 'वर्कमीइस्टर हार्मोनीज़- (2000) नाम से। मज़ेदार बात है कि लाज़्लो इस रूपांतर में हमेशा उनके साथ रहे। उन्होंने न सिर्फ़ इन फ़िल्मों की पटकथाएं तैयार कीं, बल्कि इनके निर्माण में भी पूरी तरह सक्रिय रहे। उन्होंने सुनिश्चित किया कि ये फिल्में उनके औपन्यासिक विज़न का पूरा-पूरा निर्वाह करती हैं। बेला तार और लाज़्लो ने मिलकर कई अन्य कालजयी फ़िल्में बनाई, मसलन- 'डेमनेशन' 1988 (मूल पटकथा); 'द लास्ट बोट'-1989 (मूल पटकथा) और 'द मैन फ्राम लंदन'-2007 (जॉर्जेस सिमेनॉन के उपन्यास पर आधारित)। लेकिन, इस युगल की साझा महानतम कृति 'सैटन टैंगो- (1994)' ही मानी जाती है। सात घंटे की इस फिल्म का विश्व सिनेमा में खास और ऊंचा ओहदा है। इस क्लैसिक फिल्म की कहानी, तमाम किस्म के व्यभिचार में डूबे हमारे अपने ही समाज की कहानी है। अपने आस-पास की पतनोन्मुख दुनिया से त्रस्त एक छोटी बच्ची नाउम्मीदी में ख़ुद को और अपनी प्यारी बिल्ली को निर्लिप्त भाव से मौत के हवाले कर देती है। इस बच्ची की सूनी आँखें हमारे समाज का आईना बन जाती हैं, जिसमें हम अपनी खोखली नैतिकता का विद्रूप चेहरा देख सकते हैं। यह सिनेमा नहीं मानव सभ्यता का शोकगीत बन जाता है।

'सैटन टैंगो' और 'द ट्यूरिन हॉर्स' दोनों फिल्मों में करीब पंद्रह वर्षों का अंतराल है। 'सैटन टैंगो' की यही छोटी बच्ची (एरिका बोक) आगे चलकर 'द ट्यूरिन हॉर्स' की युवती बनती है। इस बार वह अपने अशक्त पिता के साथ एक वेस्टलैंड में तब्दील होती जाती धरती के बीचोंबीच पुनः जीवन-जगत के अस्तित्व और उसके अवसान के सवालों के सम्मुख खुद को खड़ी पाती है।

लाज़्लो के कथाकार को 'उत्तर आधुनिकतावाद' से जोड़ा जाता है। अपने लेखन में वे वस्तुतः आधुनिक मानव-समाज और सभ्यता की विफलता का मर्सिया रचते हैं। दुनिया भर के साहित्य-आलोचकों ने उनके इस विषाद-मिश्रित करुण स्वर को नोटिस किया है। किसी ने उन्हें 'सर्वनाश का स्वामी' कहकर संबोधित किया है तो कोई उन्हें 'अंधकार का शिल्पी'' मानता है। हालांकि लेखक की दृष्टि में यह 'अराजकता का शिल्प' है, जो एक ऐसे समय को पुनर्सृजित करने को प्रयासरत है, जो सभ्यता की प्रगति से नहीं वरन उसकी थकन से निःसृत है। यह साहित्य इस भयानक समय में अकेले पड़ गए एक ऐसे आधुनिक मनुष्य का त्रासद बयान है, जो अपनी ही भाषा और देश-काल में निर्वासित हो चुका है। इतिहास की विफलताओं और आसन्न प्रलय की छाया में रचा गया यह साहित्य प्रथम-द्रष्ट्या निराशावादी अवश्य प्रतीत होता है, लेकिन यहाँ निराशा अवसाद भर नहीं है, यह वह साहित्य-दृष्टि है जिसे लेकर शोपेनहावर एवं सैमुअल बेकेट सरीखे विद्वान आगे बढ़े थे और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का स्वप्न देखा था।

अंतर्विरोधी प्रतीत होने के बावजूद यह भी उतना ही सच है कि लाज़्लो का साहित्य दार्शनिकता और बौद्धिकता का साहित्य नहीं बल्कि भावना का साहित्य है। यह उस आधुनिक मनुष्य की आध्यात्मिक बेचैनी और नैतिक छटपटाहट को दर्ज़ करता है जो सियाह और सफ़ेद, प्रकाश और अंधकार के भयानक द्वंद्व में उलझकर किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा है। निराशा, अस्थिरता और अराजकता से उपजी विडम्बना से लहूलुहान सार्वभौमिक चेतना उनके साहित्य को वैश्विक और कालजयी बनाती है। जीवन कितना ही हीनतर और त्रासद क्यों न हो, लाज़्लो क्राज़्नाहोरकाई का रचनाकर्म एक ऐसे अंत की आश्वस्ति ज़रूर देता है, जो कि गरिमा से पूर्ण और प्रशांतिदायक हो। उनका साहित्य सुनिश्चित करता है कि इस 'डिस्टोपियन दुनिया' में भी 'कला की शक्ति' शेष है। उनका लेखन इस बात का प्रमाण है कि विघटन और पतन के इस उत्तर आधुनिक दौर में कला से पोषित ज्ञान ही मनुष्यता को सत्य, शिव और सुंदर की ओर प्रेरित कर सकता है।

5 जनवरी 1954 को हंगरी के ग्यूला शहर में जन्मे लाज़्लो

के नाम बुकर पुरस्कार सहित कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों की एक लंबी शृंखला रही है, लेकिन इस वर्ष साहित्य का नोबेल मिलने के बाद उनके उपन्यासों पर दुनिया में काफ़ी चर्चा शुरू हुई है। विशिष्ट लेखन-शैली, किसी गहरी सांस की तरह कई-कई पन्नों पर विलंबित लंबे-लंबे वाक्य; स्याह और उजाड़ परिदृश्य को चित्रित करते चित्र-विचित्र रूपक; आस्थाविहीन और स्वार्थकातर पात्र, अपने ही बोझ तले दबी सभ्यता की विडंबनाओं को उभारते एब्सर्ड और ग्रोस्टेक संवाद, आसन्न तबाही से आशंकित बिम्ब-विधान, दो पंक्तियों के बीच जगह बनाता नैतिकता का संकट और इस सब के बीच दूसरे सभी विराम चिन्हों को स्थगित करते हुए एक समाधानयुक्त पूर्णविराम के संधान की आकुलता। यही लाज़्लो के साहित्य की असल और सम्पूर्ण पहचान है। स्वीडिश अकादमी ने अपनी वेबसाइट पर उन्हें दिये जाने वाले पुरस्कार का हवाला देते हुए दर्ज किया है- उनकी सम्मोहक और दूरदर्शी कृति प्रलयंकारी आतंक के बीच कला की शक्ति की पुष्टि करती है।

दरअसल लाज़्लो ने भाषा-शैली और शिल्प के स्तर पर इतने साहसिक प्रयोग किए हैं कि उनकी रचनाएं कई बार दुरूह और अपठनीय हो जाती हैं। इन रचनाओं को हु-ब-हु दुनिया की किसी भी दूसरी भाषा में ले आना लगभग असंभव काम है। अँग्रेजी की दुनिया में ओटिली मुल्जेट और जार्ज सिटेर्स सरीखे अनुवादकों ने यह जोखिम उठाया है और पर्याप्त सराहे भी गए हैं। हालांकि हिन्दी के पाठकों के पास अभी अनुवाद के सहारे इस लेखक से संवाद स्थापित करने जैसी संभावनाओं की पर्याप्त कमी है। जब तक इस कमी को भर नहीं लिया जाता, बेला-तार की बनाई फिल्में इस अनूठे कथाकार के निकट पहुंचने का एक बेहतर रास्ता साबित हो सकती हैं।

राकेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
पटना अंचल

ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें

ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें
वह ज़िंदगी जो खोई मैंने किसी मोड़ पर
क़दमों को पीछे मोड़ फिर से चुनते हैं उन्हें
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें

तमन्ना जो थी कुछ पाने की पा न सका
खोजा मंज़िल जिन राहों में वहाँ जा न सका
आज उठा हूँ लिए अदम्य साहस
पर डर लगता है अख़बार न बन जाऊँ
मैं दुनिया के लिए एक इश्तिहार न बन जाऊँ
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते है तुम्हें

बाक़ी जो रस है चलो पीते हैं उसे
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें
फाड़ी थी जो चादर अरमानों की
चलो आज एक बार फिर से सिलते हैं उन्हें
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें

कोशिश करते हैं पाने की उन अफ़सानों को
मुक़र्रर न कर सका जिनको दुश्वारियों से
फिरदौस हुआ, मदहोश हुआ, कल्पध्रुव मधुकिरण
रंगरूप का लेखाजोखा, जनत जल जाए जीवन
रखसार किया, दीदार किया, ऐसी विदाई मिली तुझे
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें

चलते हैं उन गलियों में जहाँ छोड़ा था उसे
कोशिश करते हैं जीतने की उसे
तेरी गलियों में हारा था जिसे
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें

क्या पता कल सुबह न हो
ये रात, ये शाम न हो
चलो पीते हैं अपने ग़म के हिस्से को
अरमानों के ऊर्ज को बना के चादर
मिटाते है ठंड के उस क़िस्से को
चलो एकबार जीते हैं धूप के अपने हिस्से को
ऐ ज़िंदगी चलो आज फिर से जीते हैं तुम्हें

सुमित कुमार झा
संकाय सदस्य
आई.टी.टी.सी. पुणे

ताडोबा का डरावना लेकिन यादगार सफ़र

रौनक स्वभाव से मस्त-मौला, हंसी-मज़ाक करने वाला, और बीच-बीच में अपनी ही बड़ाई मारने वाला इंसान। पेशे से इंजीनियर, पर दिल से पूरी तरह एडवेंचर-लवर!

इसी जुनून में एक सप्ताहांत उसने अपने चार दोस्तों के साथ ताडोबा नेशनल पार्क जाने का प्लान बना लिया।

सुबह की ठंडी हवा, कोहरे में लिपटा जंगल, और पक्षियों की आहट। रौनक का उत्साह चरम पर था।

''आज तो टाइगर फिक्स है भाई!'' उसने सीट पर बैठते ही घोषणा कर दी।

दोस्त हंस पड़े ''हाँ हाँ, तुझे तो टाइगर भी सेल्फी के लिए बुला लेगा!''

सब हँसते-मजाक करते आगे बढ़े।

करीब आधे घंटे बाद कच्चे रास्ते पर ताज़े पैर के निशान दिखाई पड़े।

गाइड ने धीमे से कहा, ''लगता है पास में मूवमेंट है...''

रौनक की हँसी तुरंत गायब।

पहली बार बिना पिंजरे के, असली जंगली जानवर उसके ठीक सामने हो सकते थे।

दिल की धड़कन तेज़ हो गई

''ये तो सच में जंगल है यार यह तो मज़ाक वाला zoo नहीं...''

कुछ ही दूर उन्हें हिरणों के झुंड और एक मोटा-तगड़ा गौर (Indian Bison) दिखा।

हर पल रोमांच बढ़ता जा रहा था।

पर असली घटना तो अभी बाकी थी...

रौनक की जीप जिस कच्चे रास्ते से जा रही थी, उसी के बिल्कुल पीछे-

घास के अंदर एक टाइगर का बच्चा बैठा था।

ड्राइवर शायद नया था या उतना अनुभवी नहीं।

उसे पीछे बैठे शावक का अंदाज़ा नहीं था।

वह जीप को रिवर्स करने लगा

और तभी

''भाई रोक रोक रोक!''

दोस्तों ने चिल्लाया, लेकिन देर हो चुकी थी।

जीप का ज़रा-सा धक्का लगा

बस... अगले ही सेकंड जंगल का माहौल बदल गया।

घास हिली और एक वयस्क शेरनी अचानक सामने आ गई।

गुर्राहट इतनी तेज़ कि रौनक के हाथ-पैर सुन्न!

शेरनी ने जीप पर हल्का-सा प्रहार किया

जीप हिली अंदर बैठे पाँचों के सीने जैसे जम गए।

रौनक को लगा

''आज तो मेरा इंजीनियर वाला करियर यहीं खत्म आज तो भगवान के पास रिज़्यूमे जमा होगा.''

दोस्तों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ रखा था।

कोई आवाज़ नहीं।

सिर्फ ड्राइवर की हिचकी जैसी साँसें सुनाई दे रही थीं।

गाइड धीरे से बोला

''ना हिलो... ना आवाज़ करो बस शांत बैठो...''

पूरा दो घंटे तक वह शेरनी जीप के इर्द-गिर्द घूमती रही

कभी नज़दीक आती

कभी घूरती

कभी दहाड़ से हल्की चेतावनी देती।

हर मिनट एक युग जैसा लग रहा था।

चेहरे से रंग उड़ चुका था।

आखिरकार, जैसे भगवान ने सुन ली

शेरनी अपने बच्चे को धीरे-धीरे लेकर जंगल की गहराई में चली गई।

जीप के अंदर जैसे किसी ने बिजली का बटन ऑन कर दिया

सबने एक साथ साँस छोड़ी।

रौनक का हाल देखकर दोस्त हँसी नहीं रोक पाए।

उसका चेहरा लाल, पसीने से तर, और आँखों में डर की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

किसी ने चुटकी ली

''ओय रौनक! तू तो बोलता था 'टाइगर फिक्स है'?

बोल, कैसा लगा एक्सक्लूसिव प्रीमियम पैकेज?''

रौनक ने काँपती आवाज़ में कहा

''भाई... आज से मैं सिर्फ इंजीनियरिंग करूँगा

ये वाइल्ड लाइफ़ का रोमांच तुम लोग ही रख लो...''

उस दिन रौनक ने जाना कि जंगल सिर्फ रोमांच नहीं सम्मान मांगता है।

वहाँ हम मेहमान हैं राजा कोई और है।

यह घटना आज भी उसके दोस्तों की मंडली में सबसे हिट किस्सा है

और रौनक?

अब भी कहता है,

''टाइगर दिखा था... बहुत क्लोज़-अप में

बस सेल्फी वाली दूरी कम थी... जान जाने वाली दूरी ज़्यादा!''

ओशीन शेख
प्रबंधक, राजभाषा विभाग
नागपुर अंचल

वाह बच्चों!

हमारे बैंक ऑफ़ इंडिया परिवार के सदस्य श्री अनुराग वर्मा (मुख्य प्रबंधक, रांची आंचलिक कार्यालय) की प्रतिभाशाली पुत्री अनुदीप्ति सोनी (केन्द्रीय विद्यालय, रांची) ने अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड में कक्षा 3 की श्रेणी में स्वर्ण पदक प्राप्त कर अपनी भाषा प्रवीणता और उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए अनुदीप्ति को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

रिश्तों की जमापूंजी - विश्वास जो चले जिंदगी से भी आगे...!

बैंक के साथ जुड़ने वाले हर ग्राहक का रिश्ता केवल लेन-देन तक सीमित नहीं होता। यह रिश्ता विश्वास, सुरक्षा और अपनत्व के उस ताने-बाने से बुना होता है जो आर्थिक सीमाओं से कहीं आगे होता है। बैंक ऑफ इंडिया इसी ताने-बाने को ''रिश्तों की जमापूंजी'' कहता है। वह पूंजी, जो न केवल खातों में बल्कि दिलों में दर्ज रहती है।

माछीवाड़ा शाखा का एक साधारण-सा दिन था, जब गुरजीत सिंह जोकि एक दूध डेयरी के संचालक थे, बैंक की शाखा में आए। चेहरे पर संतुलन भरा आत्मविश्वास और आंखों में परिवार के भविष्य की चिंता - यही भाव हर जिम्मेदार व्यक्ति के जीवन में झलकता है। उन्होंने एक बचत खाता खोला और इस तरह शुरू हुआ उनका बैंक के साथ एक अटूट रिश्ता। बैंक के साथ उनका लगभग 15 वर्षों से अधिक का संबंध रहा है । बैंक स्टाफ की सलाह पर उन्होने 50 लाख रुपये का एक एसयूडी लाइफ यूलिप प्लान भी लिया। वे समझ चुके थे कि पैसा केवल कमाना ही काफी नहीं, बल्कि किसी भी आकस्मिक परिस्थिति में परिवार की सुरक्षा भी जरूरी है।

गुरजीत सिंह ने बीमा को केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि अपने परिवार के लिए एक ढाल समझा। उन्होंने 2024 में पहला और 2025 में दूसरा प्रीमियम भरते समय यह नहीं सोचा था कि किस्मत इतनी जल्दी करवट बदल लेगी। जीवन की अनिश्चितता ने उन्हें परिवार से छीन लिया - एक घटना जिसने परिवार की दुनिया को हिलाकर रख दिया। उनकी धर्मपत्नी मनप्रीत कौर और आठ महीने की बेटी अवनीत कौर के लिए यह न केवल भावनात्मक बल्कि आर्थिक चुनौती भी थी। परंतु जीवन की ऐसी परिस्थितियों को बैंक ऑफ इंडिया समझता है, जब ग्राहक पर विपत्ति आती है, तब बैंक केवल एक संस्था नहीं रहता, बल्कि परिवार बन जाता है। गुरजीत

सिंह के निधन की खबर मिलते ही शाखा के अधिकारियों ने तुरंत उनके परिवार से संपर्क साधा। दस्तावेज़ पूरे करवाए गए और औपचारिकताओं को बिना विलंब के पूरा किया । कुछ ही समय में उनकी पत्नी के खाते में 50 लाख रुपये का इंश्योरेंस क्लेम जमा हुआ । यह केवल एक धनराशि नहीं थी, बल्कि बैंक की अपने ग्राहक के प्रति जिम्मेदारी के पूरे होने का प्रतीक था। यह वह भरोसा था जिसने एक परिवार को फिर से जीने की हिम्मत दी।

आठ महीने की मासूम बेटी शायद यह नहीं जानती कि उसके पिता ने उसके लिए क्या किया है, पर जब वह बड़ी होगी तो उसे यह ज़रूर बताया जाएगा कि उसके पिता ने उनके लिए गरीबी नहीं, सम्मान और सुरक्षा की विरासत छोड़ी है। उसके पिता ने बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में केवल पैसा नहीं, बल्कि विश्वास भी जमा करवाया था, जिसने आज उसके जीवन को दिशा दी। बैंक ऑफ इंडिया की यह प्रतिबद्धता केवल एक ग्राहक तक सीमित नहीं रहती। यह कहानी असंख्य संबंधों की आवाज़ है, उन सभी के लिए जो बैंक पर अपना भरोसा रखते हैं। जब बैंक किसी परिवार से जुड़ता है, तब वह केवल खाते का संचालन नहीं करता, बल्कि उनके जीवन की दिशा का हिस्सा भी बन जाता है। ''रिश्तों की जमापूंजी'' – एक दर्शन, एक भावना है । यह वाक्य केवल टैगलाइन नहीं – एक संस्कृति है। जो दर्शाती है कि बैंक अपने ग्राहकों को अंकों और बैलेंस शीट के रूप में नहीं देखता, बल्कि जीवंत संबंधों के रूप में देखता है। हर जमा, ऋण, दस्तावेज, हस्ताक्षर के पीछे कोई सपना छिपा होता है – किसी बच्चे की शिक्षा, किसी बेटी की शादी या किसी परिवार की सुरक्षा। बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी सेवाओं को केवल वित्तीय उत्पादों तक सीमित नहीं रखा। बीमा, निवेश, ऋण, और खातों की यह विस्तृत श्रृंखला तभी सार्थक होती है जब उसमें मानवीय संवेदनाएँ समाहित हों। इसलिए, जब गुरजीत सिंह जैसे ग्राहक अपनी मेहनत की कमाई यहाँ सुरक्षित रखते हैं तो वह जानते हैं कि यह संस्था उनकी अनुपस्थिति में भी परिवार की ढाल बनेगी। यह तथ्य बताते हैं कि बैंकिंग की असली खूबसूरती डिजिटल तकनीक या आर्थिक मापदंडों में नहीं, बल्कि रिश्तों की गहराई में है। जब कोई ग्राहक बैंक के काउंटर से संतोष और विश्वास लेकर लौटता है, तब असली सेवा वहीं पूरी होती है। गुरजीत सिंह का परिवार आज इस बात का उदाहरण है कि रिश्तों की जमापूंजी कैसे सजीव होती है। हम केवल धन नहीं, भरोसा सुरक्षित रखते हैं... यही है हमारी – रिश्तों की जमापूंजी।

Special Achievement

We are proud to share that our bank has received a prestigious appreciation from the Ministry of Finance for its Outstanding Performance in grievance redressal for November 2025. Our organisation has been ranked First among all Public Sector Banks based on the Grievance Redressal Assessment and Index Score.

This recognition reflects the dedication, efficiency, and customer-centric approach consistently demonstrated by our team. It is a testament to our commitment to providing timely solutions, enhancing service quality, and upholding the highest standards of responsiveness.

We extend heartfelt congratulations to every staff member whose relentless effort has contributed to this milestone. Achievements like these inspire us to continue striving for excellence and to set new benchmarks in customer service.

अश्रुत की शोकगाथा

I. मरणशीलता और ठुकराया गया निवेदन

हे क्रूर विधि! तू कैसा खेल रचाए,
माँ की पीड़ा पर मौन सब रह जाए।
ज्यों मैं विनती करता, सब दृष्टि हटाए,
मेरे आँसू भी काग़ज़ पर सूख जाए।

वाराणसी की गोद माँ को देने,
मैंने माँगा स्थान – पर कौन सुने?
कर्मपंथी केवल काग़ज़ बुनें,
और प्राण तजती माँ को कोई न गिने।

क्या यही है न्याय? क्या यही है धर्म?
जहाँ जीव कुचला जाए पत्रों तले?
निष्ठुर नियमों का यह कैसा कर्म,
कि संवेदना भी बंध जाए ताले?
शापित हों वे जो मुँह फेर चले,
और श्वास को मुहरबंद पत्र में जले।

II. मृत्यु-पथ का पिता और मनुष्य की लज्जा

अब पिता भी छीजते हैं रोग-चिह्न लिए,
पित्त की गाँठें ज्यों समय निगल जाए।
किन्तु न्याय की सभा में विष वचन जिए,
और मेरे आँसू भी अपराध बनाए।

यह न्याय नहीं – यह तो तमाशा है,
जहाँ पीड़ा बनती है मनोरंजन!
झूठ और छल जहाँ भाषा का नाशा है,
और सच्चा मनुज हो अन्याय का बंधन।
हे वे, जो झूठी रिपोर्टें रचते,
जो षड्यंत्रों की स्याही से लिखते दोष-
तुम्हारे नाम वृक्षों पर कौए चिर चहकते,
और तुम्हारी आत्मा बनेगी संताप का जोष।
धीरे ही सही, पर काल लिखता है,
हर अश्रु का हिसाब विधाता देखता है।

III. दिव्य दृष्टा और अंतिम न्याय

वह देख रहा है – स्वर्ग से परे,
जहाँ न्याय अडिग है, और मौन भी मुखर।
जो आँसू छल से बहाए तुम्हारे,
वही बनेंगे तुझे रात्रि में डँसकर।

तू हँसता रहा जब मैं विलाप करता,
तेरा पाषाण-हृदय सत्य से न डरा।
पर न्याय की अग्नि चुपचाप जलता,
और ईश्वर का हाथ कभी न रुका।

रात्रियाँ हों तेरी आत्मग्लानि से भरी,
माँ की चीख, पिता की साँसें तुझे सताएँ।
हर झूठ पर सौ पीड़ाएँ उभरीं,
और शापों की साँकल तुझे बाँध जाए।
मैं भले ही अभी आँसुओं में रहूँ,
पर तू अग्निवर्षा में एक दिन रहे।

अजय कुमार श्रीवास्तव
उप आंचलिक प्रबंधक (वसूली)
लखनऊ अंचल

'स्टार परामर्श' विजेता / 'Star Paramarsh' Winners दिसंबर 2025 तिमाही / Dec. 2025 Quarter		
1.	**Mr Shrikant K Wadmalwar** Palgad Branch Ratnagiri Zone First Prize	**Suggestion for Medical claim Reimbursement :** At present medical claim reimbursement under staff medical Scheme is done through manual process of submitting application and other documents. Complete process of medical claim reimbursement should be done through HRMS by uploading of documents and application. It will reduce turnaround time. Better way to track the claim. Better way to maintain record
2.	**Shahid Khan** Pepariya Branch Khandwa Zone Second Prize	**Suggestion for HTM menu :** Name of Joint A/c holder is not being displayed on screen while invoking transaction through HTM. While invoking any transfer transaction in Finacle through HTM, it should display name of all the joint account holders for validating the particulars in the instruments
3.	**Gadireddy Sreenivas** Manager (I.T.). Call Centre-Begumpet Hyderabad Third Prize	**Suggestion for CARDTRAK menu in CRM:** CARDTRAK menu in CRM. Most of the customers call to know the status of their debit card issued in new Accounts. If we enable CARDTRAK menu in CRM, then Support staff at call centres can view Indian Post Office/ Speed Post tracking number and convey the same to customers. Besides this customers can also access our bank website in below mentioned path : Grievance Option—> Services—> Request for Debit Card and track the status of their Debit card request As it is a non-financial activity, if at all any security check to be implemented then on request of card track we can keep option of OTP to his registered mobile so that on keying OTP same can be displayed. Indian Bank has the facility for PPS in their website, which can be taken to check viability of my suggestion.

"Cultivation of mind should be the ultimate aim
of human existence.
Without education, philosophy loses depth,
and society loses its moral direction."

— Dr. B. R. Ambedkar

Dr. Anima
W/o Shashikant Prasad (Zonal Manager)
Varanasi Zonal Office